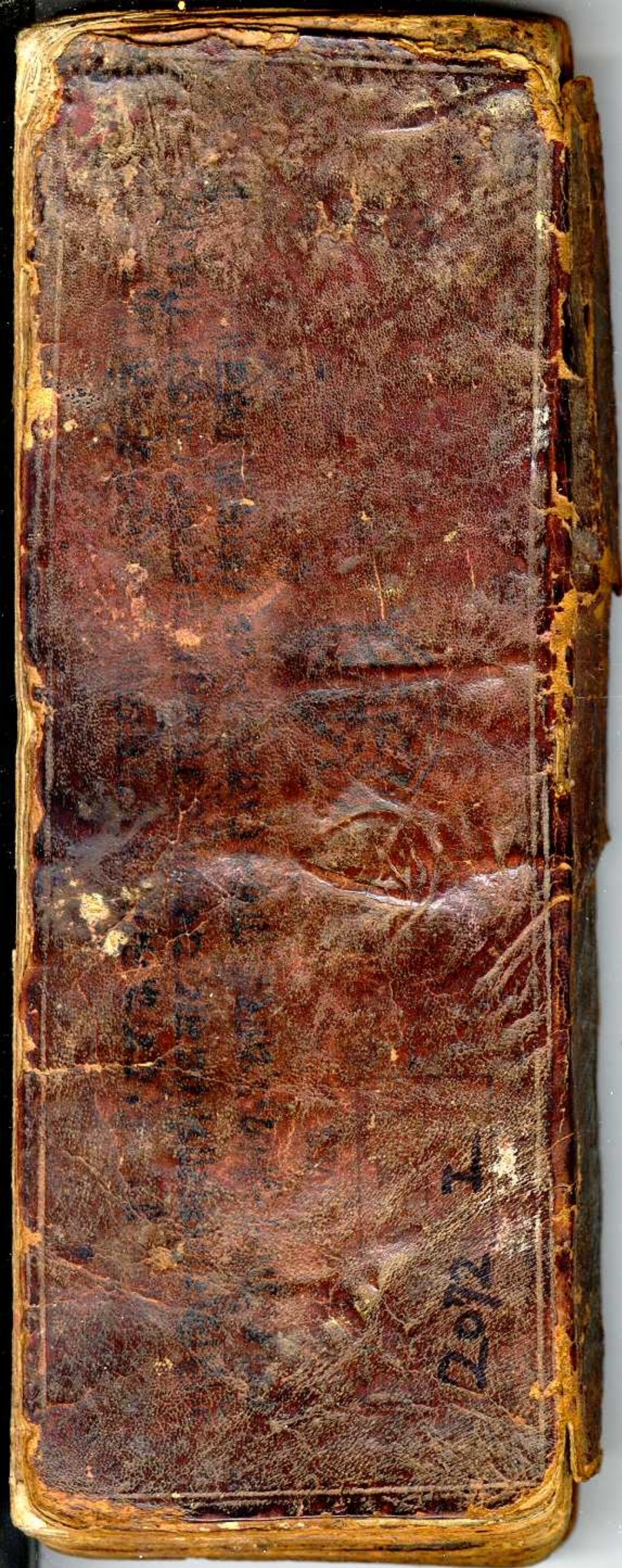




अस्माकं नष्टां वृक्षा गच्छं विस्तरेण भूम्भ ॥
गच्छं उपयमने ॥ गच्छं वृक्षां नैस्तुने ॥
अत्र धीवप्रवासी च यस्य सायां नरु स्वला ॥
अस्मादिग ४ प्रवृत्ती गतदाभामृतिनववीग ॥
सस्यदस्यमयशर्चयमा

इसी भूमिं प्रियं दत्वा विदुं देव प्रशरीनतां
स्वर्गकामो पापक्षयं लब्धुं तततिवर्द्धनं

जलं ॥ बह्मस्थानं ॥ जव ॥ जवविष्णु देवताय ॥ ३५
 दुर्वाद्रुदेवताय ॥ ३६ ॥ प्रलयज्ञाने ॥ दक्षिणमापतयेनम ॥ ३७
 शंभवा ॥ वदरीफलं हस्तानि देवताय ॥ ३८ ॥ हस्तानि ॥ हामोत

श्रीगणेशायनमः॥ यवादक
 विधिलिख्यते॥ कलुडिदधूखः
 वाद्यसोवाग्रः॥ पूष्यराज
 नयाचकः॥ अथादि०य॥ धाद
 गनिमित्तन सिद्धिनु क्रिया
 नम्॥ यथावा०युदागममि
 ॥॥॥॥॥॥ अथादिसूयार्थः॥
 आकृष्टनवजसा॥ विष्णुदवा
 दिमातृपितृमातामहदेवरूपा
 चार्थः॥ आसनपूष्यपादाद्य
 वृद्धिः॥ गगन्यासः॥ गदाध
 नायभूक्तयनमः॥ एतादिना॥
 अथयानं पूजय०॥ आत्मपू
 जार्थं विक्षयपूष्यराजनं॥
 सकथाक्ष॥ गयायनमः॥
 गदाधनाय२॥ पूष्यराजाका
 य२॥ अविगु०यविगावा॥ ॐ
 गन्नादवी॥ वाग्नगदरूपपूष्यद
 या०॥ कुगव२॥ दकाय२॥ ॥
 (मेवायद्वागचामक्ष) सावित्रावि
 जयाजया॥ देवसनावस्वदास्व
 धा॥ मागनालाकमागन०॥ दक्षि

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पूष्टिः सुथा पुष्टिः वात्मदवत
 यासद । नन्दनदिनवासव्य व
 सूदवः शरत्तविः ॥ जयाच वि
 जयाचव सफगा दानमातकाः ॥
 वाजरा मातस्यः पूष्टिवृष्टिः ॥
 नुर्वदेवरु आचार्यस्यः पूष्ट्यः ॥
 उरुवमूर्खयूष्यगाडनः ॥ अया
 दि ॥ कर्तुः सखि याद (गत्यादि
 ॥ गगाविष्वदव आवादनः ॥
 तुंडामासव्यवली ॥ मात आवा
 दनयाय ॥ तुंगलियदा ॥ तुं वि
 धूवनाट ॥ विष्णुर्तुका ॥ तुंग
 दिपासः ॥ नुर्वदेवरु आचा
 र्य आवादनः ॥ विष्वदवादि
 सव्यस्यः यवदधिदृष्टविदनी
 रुलसदिगनहासाद्यदियः ॥
 गगल्यन्दनयस्त्रायवीग पूष्यध
 यदाव अन्नसंकल्ययर्थेन क
 र्यात् ॥ ॥ मनुजस्वानवाय ॥
 तुं रुदित्यादिना ॥ तुं मधूवागा ॥
 अयादि ॥ विष्वदवादि अन्नसंक
 ल्य ॥ तुं दवसवितः ॥ अगुगंधादि ॥
 प्रसवयज्ञप्रसवयज्ञपतिरुगमयादियोगश्चर्व
 कतपूकश्चन्नः प्रननुनाचस्यनिवाचिनः स्वद
 नुस्वाहा ॥ १

दंभो विभुर्देवादिगते दास्यो सो दामुषः सुतः॥

विपुनवाः ज्ञानवायुः सन्निभस्त्विलोच्यः परमपदः॥
कृद्वत्ताभ्यामादि॥ इदमन्तादि॥ १३

(म)ग्रसम्रादिनषाणमातृगण
 यूजा कर्मालगय ॥ असनीय
 र्थं आवाहनादि ॥ अथ चन्द्र
 न यज्ञायवीत पूष धृय दीप
 नवयज्ञलयादि ॥ दूनः मन्त्र
 सप्तानवाय ॥ वन्दिगासीयादि
 नास्तोत्रिय (०७) ॥ सुधा कर्मसु ॥
 निवा आयः सन्तु ॥ पुं पूष पूत
 श्री ॥ विष्णुवा न्देवानां दत्तम
 नमूदकमदीयमसु नमः ॥
 पितृमातृपितामहदत्तमन्त्र
 ॥ देवसु आचार्यदत्तमन्त्र ॥
 यथामधिर्न ॥ नवदवगाः स
 न्तु ॥ पूष पूष ॥ अस्म (अर्गुना
 वर्णि ॥ दागावाना विवर्द्धना ॥
 उगा उवागिषः सन्तु ॥ सादावा
 विष्णवाच्यता ॥ ३ ॥ दक्षिण ॥
 अग्निसादि ॥ दू सनश्च वसाद
 क्षिप्तमगनी ॥ गगावदाचर्नि ॥
 स्वस्ववदन ॥ पुं वदुस्वसीयादि
 मगरु यूजा ॥ पुं अग्निष्टुति ॥

ॐ अक्षु ॥ ॐ अग्नेवद ॥ ॐ नमो गच्छेत् ॥ ॐ गङ्गा नीत्वा
 ॐ वृक्षस्य ॥ ॐ अस्मिन्नागा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ अक्षु ॥ ॐ सनश्च वसाद
 सैव विष्णोः ॥ ॐ वदुस्वसीयादि ॥ ॐ अग्निष्टुति ॥ ॐ अक्षु ॥ ॐ सनश्च वसाद
 नवदविर्दक्षि ॥ ॐ अग्निष्टुति ॥ ॐ अक्षु ॥ ॐ सनश्च वसाद ॥ ॐ अक्षु ॥ ॐ सनश्च वसाद
 तेजतीवो घोषा ॥ ॐ नमो ॥ आद्येनोः ॥ मन्त्रक ॥ हिरण्यव

गावचायुजा ॥ त्वं विष्टदा ॥
 यथानिमित्तन जडमान ॥
 र्थकाविनलासालावदय ॥
 स्वस्तिकसगय ॥ पूष पूष
 नगय ॥ निमर्दिनादिचाय ॥
 स्वानगनकसकलरर्न ॥ मन्त्र
 हगावचास (ग)नत्वाय ॥ ॥
 वृणकर्तुश्च सत्तु अग्निलिङ्गि
 स्वासद्याय ॥ सनश्च दिकावा
 य ॥ चन्द्रनादि स (ग)न अग्नीर्वा
 दः ॥ पुं मनाह गिषगिष्टा ॥
 दक्षिण ॥ वाचनलस्वनदाय ॥
 र्थकावि आदिन सकलद ॥
 पुं स्वस्तिकनूत्ता ॥ चन्द्रनादि
 स (ग)न अग्नीर्वादि ॥ (म)ग्रसा
 दिविमर्द्धन ॥ दवागु ॥ पू
 जाकाय ॥ साविथाय ॥ सन
 आवगिमनाह गिनयुगिष्टा ॥
 मासधलियाचक ॥ सूखावधि
 र्मालावयन ॥ दू सनजानक ॥
 स्वस्तिकासनसगयाव ॥ ॥

चत्वे विंशतियमनु ॥ ॐ विष्णु गच्छ स्वयं जमानाय
विष्णु गच्छ स्वाहा ॥ ॐ अग्नि गच्छ स्वयं जमानदिन्दु
गच्छ स्वाहा ॥

अष्टमोऽध्यायः ४

ॐ श्रवादिष्टा॥
ॐ क्षीव॥ ॐ तस्मा॥
ॐ कथा॥ ॐ प्राणा॥
ॐ वृक्ष॥ ॐ वृद्धमा॥

गनभुस्तानायानखचदन ॥
 पञ्चदन्यवाविभस्तान ॥ ॥
 अथवसुयविधानवे ॥ गदन
 ननयीगचुर्न (ममयलिक
 हूमो अष्टदलं यद्विलिख्य
 गदूपनिवृत्तमप्यायजलपू
 र्णं दध्य (सहस्रपुजय ॥
 अथादिसूयविष्वक् न्यासं वि
 क्षय अथवागपूजा ॥ गन४या
 द्यावचिमनं स्नानाचमनं सूया
 यदत्ता ॥ चन्दनयक्षापवाग
 पूष्यदद्यात् ॥ गगाद्योवाचनं ॥
 गतायामीत्यादि ॥ १२ ॥ चतुस्त्रि
 णादिधूपदीपार्कविक्षय ॥ स्त्री
 पुंकेय ॥ गगावक्ष अथयिय
 ४ ॥ गामुपायल जलद्रव्ययव
 कालदूर्वाकागसर्वकुलनक
 मूष्यचन्दनसदिगन ॥ ॥
 अथवनादकल्पेयादि ॥ तर्का
 य ॥ ०७ ॥ अथमन्त्र ॥ आदित्ये
 र्त्तयसासमं धि सदसुस्ययति
 माविन्दनय ॥ यनिर्वृद्धिदन

ॐ नमोस्तुभ्य ॥ नमोस्तुभ्य ॥ ३स्तुत्यदहन ॥ ॐ
 सामासिम ॥ ४ ॥ गगायुर्वक्त्र
 दिवीयमान ॥ ४ ॥ तुंयय ॥ यथि
 व्या ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यनम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अथगन्धादि ॥ गगासुस्तान
 याग्रादित्यनिनीकल ॥
 प्रत्यमूर्खदणयि ॥ ॥
 वक्षसूययि द्वा दणयनिमि
 गनकवर्तिकादीयादय ॥
 अनन्तनगददकनवधूसिच
 य ॥ यविशुद्धावेवूयावि
 गिमकुल ॥ ॥ वनोदणी
 द्यायनूषण ॥ ॥ चिपका
 डाकूनविखालरूननिमका
 थार्गददुनदाय ॥ लासाला
 वयनं वनूषण ॥ यरुसिद्धा
 सनाहनराग स्वस्तिकासन
 उपवगय ॥ गगानिमन्त्र
 नादिविक्षय अथवागपूजा
 लेन सिचय ॥ स्नानविषय ॥
 पूनूषणकृष्णगिनयनगिगत

वनमन्त्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अथवागपूजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अथवागपूजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उं या उं वं धीं ग्रायामा नमः स्तुती ॥ नृणां हरेण ४ पू ४
विष्णुनिवनामजगत्सिद्धि ४

दाहमेतन्मातृदिद्यात्यल्लभम
नवदः ४ नगं डीवमनवदः ४
नग ८ ॥ ७७ ॥ यामनवदः ४ न
गमिति ॥ ॥ वधूयातश्रूद्रति
विय ॥ ॥ तुंगकश्रूयावधीना
गकविनस्यगीना ॥ गकरि
नस्य विष्वस्य गकश्रूयामसि ॥
^{पानसंलिनुलाय ॥}
श्रूद्रतिविय ॥ १० ॥ मनाहृति
नयुगिष्टा ॥ सरुश्रूवति ॥
लासानावथक्तयन ॥ स्वस्ति
कासनसगयावचनूयागनया
चक ॥ ॥ गुरुलग्नस ॥ वासुग
स्वस्तिवाचनीय ॥ १० ॥ गवलिस
लकास्वसिसवाय ॥ ॥ राजना
नीगविधूं यरु सिंहासनस्थात
नरा ॥ गडयवगय ॥ वासुग
यूजा ॥ ॥ भक्तिकः पूष्टिक ॥ य
वक्षन्यादियूष्टि ॥ ^{श्रीपुत्रसुह} श्रीसमादि
नायरुक्कर्मसिमायय ॥ ॥ श्रीपु
दिविसुर्न ॥ श्रीपुष्टकश्रीग

वदि ४ ॥ सुमारि विय ॥ सा
स्विधय ॥ वधूनसुमारि वि
यसमस्तजनयार्ति ॥ ॥ ॥
निगकक्षिनविधि ४ ॥ ॥
० यज्ञविधिजुहया ॥

गुरुदिवसषष्ठमासयूसव
र्णकयति ॥ यनूषः क्रियास
रुत्तात्वा ॥ यनूषराजनयाय
नीयनूषमग ॥ ॥ कादिनय
वदकयाय ॥ वाय ॥ यूसव
नादगश्रूयुदकवृष्टि ॥ ॥
विधिर्धयवदकयाय ॥ ददि
भयाय ॥ विष्वदवादिषाग
माग ॥ ॥ गगुसाविमर्तुर्न ॥
चन्दनादिस ॥ गनश्रीगीवा
दवधूविय ॥ ॥ गगः स्कंद
यार्गकात्रय ॥ ॥ मूलदानस
कश्रूवचलसाय ॥ ॥ कमानव
सस्वनविमर्दयिव ॥ नक
वस्तुनक कृणुलग्नविधिर्न ॥
नेष्टुर्लेनपूत्रय ॥ ॥ श्रीमानव ॥ ॥ तले
सकृमानवसकेपिकायाग ॥

धितिनिपातः ॥ गोमल (म
नष्टरुल कलशुवा शायम
ल ककनामादि ॥ गवा ॥

धक् मानर्षयद्रासनसयधि
माशिमूरवनयादिगनथायन
य ॥ वृजायायवाग्नवमन ॥
यंतिर्न स (मन ॥ नक वक्तु ॥
यिरीर्न वलियातहा ॥ मू७
वलि १ ॥ मू७ धितिनिपातः ॥
लिवनदाकि ॥ ॥ मूयादि ॥
मूयाद्ययाय ॥ न्यासः ॥ मू७
यागवृजा ॥ मू७ मूजा ॥ कमा
नायगकिरुसायमयुनासना
य नूदमासन २ यूर्य २ ॥ तुं तत्वा
यामीत्यादि ॥ १२ ॥ ॥ धन ॥
गिरिव्यानस्तिर्नकं दिगु
ऊनकवासमी कमान्वित्त
यद्वर्ग नकिरुसर्वनपद ॥

मूजावद ॥ यगवाग्नः ॥ तुं यदकुन्दः ॥
मू७ मिन्दः ॥ मू७ डिद्युक्लर्ग ॥
तुं मू७ कषूनवजसत्यादि ॥ १० ॥

श्रवारुनी ॥ अंनमस्तुभेवमानायस्तु दायहाकिधनि ॥
वालायगिरिवृपायगहादिपगयनमः ॥ ४

तुं गगानमिन्द ॥ १० ॥ तुं मू७
लुवा ॥ ८ ॥ मू७ मिसा ७ त्यादि ॥
स (मन वृजा ॥ तुं वसा ४ यविर्ग ॥
तुं दधिकावृ ४ ॥ तुं दीघायि स्वा ॥
तुं लूज विष्टदा ॥ तुं या ४ रुलि
नी ४ ॥ तुं गीव्यत ॥ तुं नम ४ य
धुयि ॥ ॥ वलि वृजन ॥
तुं गगनान्त्वा ॥ यूर्व ॥ यागव
दस ॥ दकि ७ ॥ तुं वृमान
दाय ॥ यधिम ॥ तुं धृगद्युग
यावान ४ ॥ डरुन ॥ तुं नमाव
सूगमय ॥ म (ध ॥ तुं विव्यत ४
धृद्वन ४ ॥ मू७ ॥ तुं दीघायि
स्वादिक् ॥ गग (मग्नमकोमा
नी वृजन ॥ तुं मू७ माक मिन्द ४ ॥
तुं समित ७ ॥ कस्तन ॥ तुं गी
व्यत ॥ सिधुमूद ॥ तुं चतु ४
स्वसि ॥ धृय दीय रुल न
वय ॥ मनाह निनयुगिष्टा ॥
जायसाग ॥ मू७ गंधादि ॥

ॐ नमः ४ कृमानाय ॥ जयति क
 नकदंभु निमलितकिदसा
 गगनगल विवा नोयस्य कंठु
 मयि नः १ सकल युवनना ॥ थ
 दवदवधुमानः १ नववनर
 वगक्ष कृत्तिकावद्विजाग १ ॥
 नमस्तुमे कृमानाय स्कन्ध
 किधनायव । वालाय निस्वि
 नूराय गुहाय पगय नमः १ ॥
 भूगन्धदि ॥ ॥ ॐ निवा
 म्भवनपूजनं ॥ थंकादिम
 नवाभूगपूजाय ॥ वाभूग १
 मउक्षय ॥ १०० ॥ यूनूषनवधु
 लासालावदय ॥ वधु स्वस्ति
 कामनया दूखीरुयउयवध
 य ७ ॥ यूनूषननिमिद्धन ॥
 भूधियाग दकन सिचय ७ ॥
 ॐ यविगुष्ट १ ॥ स्नानविय ॥
 धी १ ॥ भक्ति ॥ मगरुगाउवास
 ॥ गहननत्वाय ॥ नकवसुविय ॥

संय

चन्दनादिभूषावादिपूज्यन
 विय ॥ थनधूनहावयूनूष
 नस्त्रीषवलासगस्यनद्वेस्य
 कृमानधयूजाय ॥ ॥ भूया
 दिसूयाद्यन्यासगयगीन ॥
 भूधियागपूजा ॥ भूस्मपूजा ॥
 कृमानाय ॐ दमासनै १ यूप्य
 २ ॥ ॐ गत्वाजामि ॥ ॐ दवस्य
 त्वा ॥ ॐ गत्वाजात्वा ॥ ॐ वदस्य
 त ॥ ॐ चत्वाविष्ट ॥ ॐ द
 वादवी ॥ ॐ भूस्माकमिन्दु १ ॥
 ॐ वदस्य गच्छदि ॥ ॐ यगवा
 लं १ ॥ भूवादनादि ॥ ॥
 भूधनवकयत्वादि ॥ मयू
 नासनाय २ ॥ ॐ कृमानाय २ ॥
 यूप्यविधानं ॥ ॐ स्मन्नाय २ ॥
 वालचूयि ॥ १२ ॥ वदकाय २ ॥
 नकवधुयि ॥ गकिदसाय ॥
 यजननाय ॥ ॥ ॐ यदकुन्द १ ॥
 ॐ स्नानाद्यधि विना ॥ ॐ भूनिर्म
 क्षी ॥ ॐ भूमन्द १ ॥ ॐ वसूधम ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ यणवा ॥ १ ॥ ॐ गजकलुपि
 गदाधियगय ॥ २ ॥ पूर्व ॥ ॐ क
 कदायमयनाधियगय ॥ ३ ॥ द
 किं ॥ ॐ दधकलुपि गत्मा
 लाधियगय ॥ ४ ॥ पश्चिम ॥ ॐ ल
 म्वादनायकलगाधियगय ॥
 उत्तर ॥ ॐ कमानायमयनाधि
 यगय ॥ ५ ॥ मध्य ॥ ॐ दधमनका
 ययूनषमसद ॥ ६ ॥ ॐ दीधयिस्त्रा
 ॥ ७ ॥ कजान ॥ ॐ या ॥ रुतिनी ॥
 कथन ॥ ॐ डाधधगयस्व ॥
 स्वस्तिनामिमीता ॥ नकचन्दन ॥
 ॐ दधयक ॥ नकयस्त्रायवीता ॥
 नकयस्त्राय ॥ ॐ यणवा ॥ १ ॥ ॐ म
 मि ॥ ॐ गीष्वा ॥ ॐ म्माक
 मितु ॥ ॐ वदस्यनकुदि ॥
 ॐ वदस्त्रादि ॥ धूपदीपगुण
 नेवयादिमनाहृतिनयनिष्ठा ॥
 आयसाण ॥ अयनिकनदकु
 णादि ॥ म्मागन्धदि ॥ मण्डल
 ॐ गववायु ॥ २ ॥

ठाय ॥ नमस्य ॥ मृगार्णध्वगं
चन्दनादिमृगीवदिष्टां तुं य
प्रवाण ॥ ॐ द० द० वि ॥
म्राचम्य ॥ सृष्टिस्त्विन्नगन ॥
नकवमुकीगाय ॥ ॥ ॐ ति
कमानयूजाविधि ॥ ० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथ पूजार्चनं कथयति ॥ कमान
 कलेसद्वन सुष्ठु वस्तुन
 तीयक ॥ कमानस्याग्रमभय
 नमस्तुलकावय ॥ १५ लादामा
 नय ॥ वडसिवाव कथदा ॥ य
 तिकयतिरुगस्य मगिलखन
 नये ॥ पूनूषण ॥ वडसिवाव
 नय दक्षिणदिश ॥ कथदा
 नय वामदिश ॥ गायकाय
 उमयागवस्य लादामासतया
 वयुजायाय ॥ पूनूकामनान ॥
 पूनूषणमयगीमस्तुलासाधय ॥
 दक्षिणयाटलिस ॥ १६ क्षमचुद
 न्ति ॥ १७ वनयाटलिस ॥ १८ वन

स्वस्मानग्रहपीठविनासयग॥२

उक्तपाठलिखीजहानिविविक्तथ॥

स्यग ॥ वलावकुमनकासमथनपुरुष
वाक्मन स्वमिवाचनयावक ॥ नृ
मीयाजवकासमकठमिवाउथ ॥
न ॥ वद ॥ तुदिबध्यगर्ग ॥
खवकासमकठदा ॥ वद ॥ तु
श्रुयः ॥ मरुग ॥ गकस थिय
मकु ॥ तुस्य ॥ तुसिगनत्मान् ॥
तुस्मिनः ॥ तु ॥ वद ॥ वद ॥
व कामन वदवती गवती ॥ श्री
वदि ॥ मनाहृतिनयनिष्ठा ॥
मरु श्रान्नियायर्थकाविन ॥
मनसकल्य ॥ ददि ॥ कमान
वयादूधन ॥ वाक्मनदिव्य ॥
वाचनस्वानन ॥ तुस्य ॥ मयाय ॥
तु ॥ वदवती ॥ तु ॥ तुग्राधि
पगय ॥ तुनमसुसुमाना
यथादि ॥ मरुगन्धि ॥ थका
दिम्रादिनश्रुतिषक चन्दना
दिम्राणावदि ॥ ठाकविय ॥ व
ठाषधीखसचयक ॥ थसास्य
साखिथम ॥ मसखसचायक ॥
वाक्मनगाम्बूलदयाग ॥ नकवमुनि

लवङ्गवान्निय ॥
वदवती ॥

तदनननननकममिद्वकम
विवक्तिय ॥ वदवती ॥
नृतिर्यवती ॥ मत्पमीतनरुद
यत् ॥ नदीगन ॥ यानकनेकर्मनर
कुरुतादिकेवक्तियत्पुनरुद ॥
श्रुथमीमकानयनकमकिया ॥
नित्यकमानकलणयुजा ॥ यव
दकयायर्थकाविन ॥ नानायवनी
लसाय ॥ मूलदानमविधिथ ॥
कलणयार्थगिनंदवत्तय ॥
गल ॥ मगुमसकीमानी वलिवाय ॥
मगनसव्यायजानव ॥ मरुम
मलवकुलिवनय ॥ नानायव
गिगदमालानकाखायकी ॥ व
मयधन ॥ ॥

युवपवश्रुति कार्याय ॥ यथ
यथविधिमकुवयुजा ॥ वद्वकल
मयुजा ॥ तुगलाजामीत्यादिदान
युजा ॥ वद्वकमानायनम ॥ दसास
नाय ॥ ॥ धर्म ॥ यीनीगीचतु
वदि ॥ वद्वकवचनानन ॥ दसा
नचविशाली दलुदकमकुली ॥

वाक् ॥ श्रीमकानयनानर वद्वकदिक्लमवर्न

मासवसिक्तमवावाकमवावादिन ॥

[illegible]

ॐ पवित्रस्मा ॥ वृत्तं हंति
ॐ तमिन् ॥ ॐ श्रुति यमः ॥ ॐ आदित्य
ॐ यमाजिन ॥ ५

ॐ या १ रुलिनी १ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॐ नमः १ यक्षाय च ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 वानिषदनमिषादि ॥ ८ ॥ मास
 नक्षत्रपूजा ॥ वलिपूजा ॥ ॐ
 गणेशाय नमः ॥ ॐ यागवेदसः ॥
 ॐ नमः नूदाय ॥ ॐ धर्मधृति
 यावानः ॥ ॐ नमः वरुणाय ॥
 ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ समस्त देवता १
 दूखापिखा ॥ गणेशाय नमः
 कोमांशुपूजा ॥ ॐ नमः गणेशाय ॥
 नमः १ ॥ जागवदसः ॥
 नमः वादनादि ॥ नमः कामिन्द
 १ ॥ ॐ समस्त १ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 वरुणसि ॥ ॐ धूमसि ॥ ॐ गजा
 सि ॥ ॐ या १ रुलिनी १ ॥ ॐ नमः
 यग ॥ मनाह गिनयगिष्ठा ॥
 जाय १ ॥ मारु ॥ नमः गणेशाय ॥
 नमः यदा मर्नकृत्वा ॥ वनसाध
 धनार्क ॥ ॐ यागयाग ॥ ॐ नमः
 मसि ॥ गणेशाय नमः १ ॥ ॐ क
 कृत्वा ॥ देवर्न ॥ ॐ वरुणाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसुदेव उवाच ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

॥ चन्दनादिम (भनश्रीणी
 वदि ॥ ॐ श्रीवचुषमा ॥ श्रीकृ
 णि ॥ ॐ मादिकृष्णायदाकृत्त
 मस्तु श्रीगानानवधिदि ॥ यून
 मय कल्याउयअगमययथाम
 नू ॥ श्रीकृ णि ॥ मनाहृ गिनय
 निष्टा ॥ वलानूकर्मचनूपा
 लन ॥ वास्तुवनत्वमिवाव्य
 य ॥ ॐ ॥ पुनयहृमिदा
 मनस्यानरा ॥ ॐ गृहमालाया
 गं श्रीकृ णिविय ॥ ॐ त्वजविष्ट
 दा ॥ गृहमालाविय ॥ ॐ श्रीकृ
 ण ॥ कृमानकलमयहृमयुयद
 यक ॥ श्रीकृ णि ॥ ॐ यणवागम ॥
 कृमानवास्तुवनवालमाय
 थकाविष्ट ॥ नृमकुनादि ॥
 लामालावदय ॥ ॐ नगनका
 वजमउमगय ॥ वधृष्टय
 दगगद ॥ श्रीकृ णि ॥ ॐ श्रीथ
 रुवीनागमदिनीवाजान ॥ सगय

॥ गीयाचायन्या वीनगवहृति ॥
 नियूकामयन्यगमधमूपादा
 रुनक्ति ॥ वगुगद ॥ श्रीकृ णि ॥
 ॐ श्रीवगल (अदयत्यभिगका
 धातिहृतायुवजसाविमान ॥
 ॐ ममया ॥ सक्षमसूर्यस्य नि
 शुनविष्टा मातिग विदक्ति ॥
 गी ॥ श्रीकृ णि ॥ ॐ वदामिय
 नत्तदववददवया वदागव
 सनमध्ववदरुया ॥ यचगद ॥
 श्रीकृ णि ॥ ॐ निम ॥ गीवाय ॥
 वीनकथकाय ॥ श्रीकृ णि ॥ १०
 ॐ मत्वम (नसूर्यस्यवचसागध
 १ समृषा ॥ ॐ सुगन ॥ सपिय
 लक्षन्ना समदमायूषामवच
 मासयजयास ॥ नायस्याषध
 निषीय ॥ नावायवर्कयज
 मानसमदाल ॥ श्रीकृ णि वि
 य ॥ ॐ तिष्ट ॥ ॥ ॥ क
 मानवैकलदीदानयाय ॥ वा
 क्षणवायूजायाय ॥ नकविधि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

ग्रन्थपूजाविनमस्य॥ॐ॥ शिरोऽर्चयामासुः॥ निर्वृत्तना॥ पावसं निर्वृत्या॥ १३

तनवाले ॥ उच्छिष्टकलखसक्त
 य ॥ श्रीगोविंद ॥ ७ ॥ अन्नयग ॥
 मनाहृतिनयतिष्ठ ॥ सद्य द
 क्षिप्त ॥ वाचन ॥ न्यास ॥ कल
 गवलि विसर्जन ॥ धंका निश्र
 दिनश्रुतिषक ॥ श्रावति ॥ सा
 खिधाय ॥ ध्वक् दूक् दूक् स्त्रीपू
 वृषस्यलाहानगव ॥ सगिक
 दूस्त्रानयाय ॥ पूनूषनसक्ति ॥
 निर्यकणवाचनयाय ॥ ० ॥
 कृतिमासयुवगविधि ४ समाक
 ४ ॥ १११ ॥ ११११ ॥ ११११ ॥
 श्रुथजानकर्म ॥ गणायोपिगार्थ
 कादिस्त्रानयाय ॥ नान्दीमुख ॥
 यवदकयाय ॥ वाक्पूजयागा
 दगनश्री ^{दिमुखआदीकी} यवदकवृद्धिभृष्ट ॥
 विष्वदवयानाम ॥ वृद्धिभृष्टकु
 लुदको सत्पानान्दीमुखेवसू ॥
 निमित्तकालकान्दीकी कन्या
 यधिवलाचमी ॥ पूनवामादवा
 ल्वेव विष्वदवादसमस्तगा ॥
 विधिधंयवदकधनक ॥ ॥
 विसर्जन ॥ यदक्तनवाक्का ^{लनकलश} वनस

कलगपूजायाय ॥ गण(गणु
 मकोमानी वलि कवामालका
 स(गनवयय ॥ यगवाला ॥
 गग ४ कलगपूजन ॥ ७ ॥ गला
 यामीत्यादिगुदलाकपालादि
 पूजा ॥ जायसाग ॥ वाक्पूज
 जा ॥ यजुष्यय ॥ अन्नसक
 ल्यदक्षिप्त ॥ वलि विसर्जन ॥
 विगागायवक्तुनतिय ॥ स्वस्ति
 कासनसत्त्वान ॥ पूर्वमुखन ॥
 नृमर्चने ^{सलीवातनि} ॥ कलशश्रुतिषक ॥ ३
 जालिम्यालसगय ^{श्रुतिपुष्टिकलानविय} आदिनय ॥
 चन्दनादिम(गनश्रीगोविंद ॥
 श्रावति ॥ साक्षीधाय ॥ आसिजा
 गकक्षयविय ॥ ॥ जागस्त
 नसवाक्पूजानायवदडान ॥
 विगादस्तनजालिम्यालसगया
 लखनदाय ॥ ७ ॥ उज्जुदगमा
 स्यागकडिनायगसद ॥ यध
 यवापूजानिप्रथमदुपजनि
 गुवार्यदगमास्या ^{श्रुमकुनाय}
 गसद ॥ ७ ॥ यस्मै नमः ॥

कायस्थयानिदिनवधयी।
 श्रुतान्यदयस्यगमागाममजो
 म० स्वादा॥ कृमानस्रानेन॥
 ॐ ममदेवदुष्टनिर्घेनेल०
^{गुनायकवनेव मा० मनेय}
 मोनक्षवनीन कस्मिंश्चनाय
 नमवनाय यद्यतां॥ श्रुता
 यानाशाद्यगमधू सूवधुक्ति
 दिनयालवधू पिबुदसून
^{नालिभूमयवले धूलकस्मिन्पुनः}
 श्रुतामिशुधनयोगिनदया
^{कृमानाय}
 ॐ ॥ ॐ ह स्त्वयिदक्षमि ॥
 ॐ शुवस्त्वयिदक्षमि ॥ ॐ स्त्व
 स्त्वयिदक्षमि ॥ ॐ रुकुव०
 स्त्वयिदक्षमि ॥ कृमान
 श्रावम्य ॥ चन्दनादिग्राणीवा
 द॥ कृमानस्यदक्षिणक०
^{ववुन}
 श्रुतगनमनु० ॥ ॐ श्रुतिना
 यूपान्सवनस्यगीतिनाय
 य्मां स्तनत्वायूषायूपमर्कक
 नामि ॥ ॐ सामग्रायूपान्सडा
 वधीतिनायूपान्सनत्वाय
 वायूपमर्ककनामि ॥ ॐ वेद

नायूपमर्ककनामि ॥
 स्तनत्वायूपमर्ककनामि ॥
 दवाग्रायूपमर्ककमृगना
 यूपमर्कस्तनत्वायूषायूप
 मर्ककनामि ॥ ॐ सवयग्राय
 यूपमर्कस्वगनायूपमर्कस्त
 नत्वायूषायूपमर्ककनामि ॥
 ॐ विगनग्रायूपमर्कस्त्व
 क्षरिनायूपमर्कस्तनत्वाय
 वायूपमर्कस्ते कनामि ॥ य
 ह ग्रायूपान्सदक्षिणशि
 नायूपान्सनत्वायूषायूप
 मर्ककनामि ॥ ॐ समुद्रग्राय
 यूपान्सुवगीतिनायूपान्स
 नत्वायूषायूपमर्ककनामि ॥
 पुनः ० क० ॥ ॐ श्रुतिमृगनिमनु० ॥
^{ग्रायुषी}
 ॐ सैयदि कामयत्सर्वमाय
 नीयाना ॥ ॐ ॐ ॐ मिश्राव
 न्धवीनवीनमगीडमथ ॥
 सात्वीवीनवगीरावयस्यात्त
 निवगीकनगधून ॥ कृमान

स्य वाक् पृथगिति ॥ ६ ॥ दिवस्य वि
 पथर्मयं शुभं नृपसिद्धिनी
 र्यय विज्ञानवदो ॥ ७ ॥ गीयम
 नूनमपि नृजमुमिन्धानमनं
 जननस्वाधी ॥ १ ॥ विद्याननृ
 (नृगंधागुयावि विद्यानधम
 विद्यागायनगा ॥ १ ॥ विद्यानना
 मयनर्मयुदायदिद्यानमृत
 यननृजगन्ध ॥ २ ॥ ६ समुद्र
 त्वानमपि नृपकनृवदानी
 (ध दिवानृ (नृधन ॥ १ ॥ गीय
 त्वानजसिगसिवा ॥ १ ॥ समया
 मयसुमदिया नृवदन् ॥ ३ ॥
 नृकन्ददनिमनयनिवदो ॥
 कामानविददो नृध ॥ १ ॥ समुद्र
 नृ ॥ मयायनृना विद्यामिद्धा
 नृकदानादमीगानृनागाय
 नृ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १ ॥ मयायनृधनृ
 नृयानृ मनीषाधायवदो ॥ १ ॥
 म(नृया ॥ १ ॥ वसु ॥ मृनृ ॥ मरुता
 नृपानृजाविगायनृधमामि

धनः॥७॥७॥ विविधस्य कुरु कुरु
 वनस्य गुरु श्रुवा दसी श्रुवः
 ज्ञायमानः॥ वीर्यं विदधिम
 शिनस्य नायं जनाय दनिम
 यजन्तयैव ॥७॥ उ निका व
 का श्रुवतिः॥ सुमन्त्रः॥ मरुष
 निवमृगानिधायि॥ वूर्यकि
 धूममनूषराविशुद्रकृत्
 (॥ विषाद्यामिनकन ॥१॥
 दन्तानां नृक उद्याव्यशौदम
 मयमायूः॥ प्रियनूवानः॥ श्रु
 निवमृगानिधायि॥ वूर्यकि
 दनं शोनजनयत्सुवगाः॥७॥
 यस्तु श्रुवकृत् वरुद (॥ व
 वूर्यदवद्युतवक्तम (॥ ७॥
 युर्तनययुतववस्था श्रुक्काशि
 सुमन्त्रदवर्क यविष्टः॥७॥
 श्रुगं राजसोष्टवसं यमन्तक
 उक्त श्रुगजलस्यमान ॥ प्रि
 यः॥ सुयप्रिया श्रुगवाद्य
 ज्ञानेन शिनददृक् नित्वः
 ॥१०॥ त्वामन्त्रयजमानो श्रु

नृधृन्निष्ठावसूदधिववाया
 वि॥ त्वयादविगमिच्छमाना
 वृजं (गमनमृगिजाविवव्र
 ४॥११॥ ॐ त्र्यंकादगमवाज
 य०॥ विगाय००॥ यून००॥ यि
 नायुर्वमूर्खवृया०॥ ॐ वाव
 ॥ दक्षि०॥ अयाना॥ यष्टिम
 ॐ उदाना॥ उरुव॥ ॐ समाना
 ॥ पूर्व॥ ॐ उदाना॥ कमान
 जागमुनं आलंशनमकु०॥
 ॐ वदगुरुमिदृदयं दिविच
 न्दमसिगिर्ग॥ वदादकन्मा
 नविद्यानय०॥ मगनद०॥
 नमिति॥ ॥ यून०॥ विगाय
 कनकमानवप०॥ ॐ अस्मा
 शवयनगुगविदिवधमगु
 नशिव॥ आत्मनयुनामा
 सिर्माजीवगनद०॥ गग०॥ क
 मानस्यमागनमशिमकु०॥
 ॐ उजसिमिगावनूवीवीनवी

नञनथा॥४॥ मात्वीनवगीर
 वयासकीनवगीरवत् ॥ ॥
 यजमानेनकमानस्यमोतुद
 किंरुक्तनयकाल्यमनु॥४॥
 दुर्दमः कनमृडः स्वर्गध
 यायायिपीनमन्त्रनस्यध्व
 उत्तमशेषस्वमधूमक्तमर्वसम्
 दियः सदमाविगम्ब ॥ ॥
 पुनर्वमिदस्मिन्काल्यमनु॥४॥
 उयस्मिन्काल्यमनु॥४॥
 यानन्तधामम् । निवायानिम्
 नस्वगीतमिदधामवक॥४॥
 कमानस्यगयनस्मान्निच
 यदः कलगम्ब यनमनु॥४॥
 उन्मादादवयुजागुथयधद
 वयुजागुथ ॥ उवमस्याः सु
 ति कायाः सवृणीकायाजा
 गुथ ॥ गगानाजीकुदनी ॥ वा
 द्मन्त्रनस्वस्तिवाचनवत् ॥ मा
 पिनास्त्रान्कय्यति ॥ पिनाचन्द
 वरुनपिचिञ्जिलालाय ॥ पगवालाप्रधमकय्यय ॥

ॐ प्राणायामाय नमः ॥ प्राणायामाय नमः ॥ चक्राय नमः ॥ शिवाय नमः ॥
नादिश्रीवृद्धि ॥ ॐ ॥ ॐ ति

जागकर्मसमार्क ॥ ॥
गंगाजागदिन दशवलासीस्तिकाग्निकृत्वा ब्राह्मणेन ३

गगनसृष्टिकाग्निकृत्वा दान
दं (ग) सुयनपूर्वमुखेन ॥ व
लिजयतिन ॥ श्री (ग) ॥ सु
यार्थक्षेत्रय ॥ न्यासविध
यार्थयागयुजा ॥ श्रीसयुजा ॥
यदवायव ॥ ॐ मानसाक ॥ ॐ
त्वावृत् ॥ ॐ तत्त्वयामि ॥ गाय
त्रयनवी ॥ ॐ सदसस्यगिमकु
न ॥ अन्यविद्ययन ॥ ॐ वादय
धम ॥ अथवाशादकनासृक
नी ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ दिनव्य
गर्ग ॥ ॐ यज्ञानिन ॥ ॐ गजा
मि ॥ ॐ दिनव्यवर्तु ॥ ॐ त्वा
वृत् ॥ काक्षग्रहणी ॥ ॐ न्धना
त्वा ॥ ॐ भगवत् ॥ ॐ अग्निमृ
क्षि ॥ ॐ कथादमर्गि ॥ ॐ अन्व
निवृष ॥ यथा निमित्तन अग्नि

सुयनसुमृद्धर्मिस्तु ॥ ॐ मयि
गृह्णामि ॥ स्वस्तिवाचनं ॥ ॐ म
मालिग ॥ ॐ पृष्टादिवि ॥ वदास
न ॥ ॐ अग्निमालिगदि ॥ वदापृ
जा ॥ लोकपालमृजा ॥ सुनिकाग्न
य ॥ ॐ उवाहदव ॥ ॥ ॐ म
दाधवायनम ॥ ॐ मदाधवमृत्
य ॥ मदाधवायवर्लि ॥ श्रीवा
दनादि ॥ ॐ कामदवाय ॥ ॐ का
मदवमृत्तय ॥ ॐ कामदवाय
वर्लिगृह्ण ॥ ॐ नमः ॥ श्रीवादनादि ॥
ॐ यगल्लायन ॥ ॐ यगल्लानिमृ
त्तय ॥ ॐ यगल्लायवर्लि ॥ ॐ नमः
नवयगगन्धाय ॥ ॐ कथानिधि ॥ ॐ द्वादिष्टा
श्रीवादनादि ॥ समिधदातिवका
सद्वय ॥ ॐ कर्तुकायवत्वादा ॥
ॐ कर्तुषूक्ष्मया ॥ ॐ द्वादिष्टा ॥
ॐ गङ्गामर्कडयवीन ॥ ॐ भुक्तिक
यउत्तवत्त ॥ मलिस्तुवादाध
सम्भवमानस्यगादितिस्वादा ॥ पुननाक
ॐ श्रीलिखननिमिष ॥ किवदन्त ॥
लकाशक कपूरधनगमलाशमयाय ॥

उयधुतिः दयक कृष्णगु
 यागयामगिरुदीमुखः १०४
 यानुगन्धवनोनस्यगादिनि
 स्वाहा ॥ वनः १०४ कैंड का नवा स्वा
 हा ॥ १०४ कैंड शिदूया ॥ द्युगा
 दूतिविय ॥ गगगुनू ॥ दूग्नकि
 १॥ व्यादृति ॥ वदय ॥ लाकया
 ल ॥ १०॥ सुनिकाग्नयमदीध
 नाय ॥ व्यादृति १०॥ १०४ सुसंखा
 ना ॥ ग्नातिक ॥ योष्टिक ॥ दूधु ॥
 १०४ दूधुद्वि ॥ ग्नासंभा ॥ ग्नागी
 वद ॥ नककृदूयाथनिविधि ॥
 धनं लिनिपदसंधावलासदू
 जाय ॥ ग्नाचम्य ॥ सूर्यार्घ्य ॥ न्या
 सयाय ॥ ग्नार्घ्यागयूजा ॥ ग्नात्म
 यूजा ॥ १०४ गत्वायामि ॥ ग्नासर्न ॥
 १०४ दवस्यत्वा ॥ ग्नासूदर्ग ॥ १०४ वी
 वरु ॥ कष्टगदर्ग ॥ १०४ न्धाना
 स्वा ॥ सिगन ॥ दूधविधिर्ध
 दामयाय ॥ विधिर्ध दामधन
 ग्नाकिप्रष्टिकपूक्षा ॥ ग्नासंसा वाकवलि ॥ ॐ
 विश्वतश्च दूतना ॥ धननित्यवलि ॥

क ॥ धूकृदू न्यासयाहाववलि
 दर्व मिदूकाठ विसर्जनियाय ॥
 वलिलखसूचय ॥ मिदूकाठ
 खसूवायक ॥ ॥ १०४ निसूति
 कामिविधिसमाफ ॥ ॥ ^{धनजाके} ^{मंशाय} ॥
 ॐ कायस्वाहात्यादि जानकमे ॥

गग ४ षष्ठ दिवस विष्णुजागर्च
 नंक्याति ॥ कंठावाचनिसन्या
 सयाय ॥ नानायगर्च वलिवि
 सर्जनदवर्च स्नानयाय ॥ दू
 दसवायनानायगकलस ॥ ॥
 जन्मयणिका ॥ वलि गग ॥ गग
 ग्राम ॥ कोमानी ॥ वदिर्नगगस
 स्वाप्य ॥ कमानगुदुलिविया ॥
 १०४ दिनधवर्ग ॥ दानसखी
 जानकंगय ॥ पदापयपनग ४
 यूनर्न ॥ यथागकिवाग्म ॥
 र्थकादिस्यनपूष्यराजन ॥
 वाग्मस्ययूजायायविधिर्ध ॥
 दानादिधूयदीयपुतिष्कार्क ॥
 जायकाग ॥ वाग्मगयूजा ॥

मादुनिरुयचडाठिपूजा

वाक् ॥ यजमानस्यप्रयजागादृहाषडीयागर्चनतिमित्यार्थ
 षष्ठीमश्रीलपूजाजिलाकमानपूजावलीगगत्रकाडीमा
 ला ॥ १०४ कंठावस्यायत्रस्कारुनडीगदीपपक्षाल्य ॥

भक्तिकव (१०॥) उस्वस्तिनामि
 मीगा ॥ उकनिकुद ॥ उम्ना ॥
 ४ निमान ॥ उजजाग्र ॥
 उमरुसुगीषा ॥ उम्न (न) सुन
 ४ ॥ उवय ॥ साम ॥ जागमान
 वसि मदिन यूजा ॥ न्यास ॥
 उतत्वायामीत्यादि यूजा ॥
 उनिवायनम ॥ उसरुत्थ
 नम ॥ उद्योत्थ ॥ उसन
 थ ॥ उम्न सुगाये ॥ क
 माये ॥ धन ॥ सकलस ॥
 उविष्यगन्ध ॥ उगा ॥ स
 वि ॥ उद्योमालकीन ॥ उम्न
 म्भ ॥ उवत्वाविष्ट ॥ ४ ॥
 उम्न मिड ॥ उयगुवा ॥ ४ ॥
 गिलाकमान ॥ जायसा ॥
 निवामरुतिनामाव यीति ॥
 सगतिवच ॥ म्न सुगा
 मावेव षठगायविष्टवना ॥
 (मेव्यापेणायथस्कन्द ४ नि

७४ सनक्तिगस्तथा। गथम
 ममाप्ययवालोचकगविष्टि
 दवना ॥ म्गुगन्धदि ॥ दकि
 ॥ ४ ॥ उजमानस्वानगनक ॥
 उद्यो ॥ भक्ति ॥ ४ ॥ स्वनविय ॥
 स्वनगनक धूपदीपान् ॥
 जायसा ॥ म्न सकल्य
 दकि ॥ ४ ॥ दवम्नागविष्टि ॥
 वलिममग विसर्ज ॥ कल
 भशिक्षक ॥ चन्दनादि म्ना
 गविष्टि ॥ ववजागक काय ॥ ^{यिलि}
 मादनीविय ॥ ^{चशठिधिय ॥ वेधन ॥} कलसजाग
 वगजाग स्वनसगय ॥ वाग्म
 गराजन ॥ ॥ ७० निषष्टि
 यागवर्नसमार्क ॥ ७० ॥
^{प्रतागसुनिकाग्निविसर्जनी} तग ॥ ^{रुसवयुक्त} यत्पुषवलीयां निकुम
 ॥ ४ ॥ जिमनिद्रुद्रु सिधाल
 कसगया दोलोवाचलाव ॥
 म्नावमट म्नायोनयासदवन
 प्वाककूठकिगय ॥ य्वा

गगनामकवर्णकयति॥ पृथ्व
मुखनकलग्मुयर्न॥ ग्वाल
सद्यवगयावग्मनावननना
मचाय॥ लूनलियेसिनकल
सदवनगयक॥ यंरिनसग्म
न॥ यरिनवलि॥ रूलकन॥
चुसायार्नचाकवलि॥ क्षया
लकाक रूयावचुसायथ
थयक॥ वरिनववा॥ दूकी॥
गगग्मग्मस॥ कीमावी॥ व
सयथनि॥ थकाविगयूष्य
राउनयाचक॥ वाक्षन
होमयाकसा पार्थिवान्तिग्रन्थनाम॥

कलभर्चनयाय ॥ दानार्चना
दिधूय दीपजपसागार्कसमा
यवाभ्युपजाकार्या ॥ धूपदी
पार्क ॥ नगः ॥ भक्तिर्कथं ॥ ०७ ॥

मगरुगात्रवायुजा ॥ लासाव
^{मिसार्थकालिन}
दयैकैथकाविन ॥ स्वस्तिक
^{वालखामामने}
मनय ॥ वासावर्क ॥ नमस्कृ
नादि ॥ अथवागुलखनदाय ॥
त्वानगनकधूपदीपानर्क ॥
भक्तिकस्तानविय ॥ दीपलाह
नका ॥ वस्तुविवगिविय ॥ ॥
प्रयिवागयाकाससक्याय ॥ च
न्दनादिमग्ननविय ॥ ग्ल
सवाहधननत्वाय ॥ कायया
जवक्रसस ॥ अथवाखवक्र
सस ॥ नामकने ॥ नासिचकाव
^{भयभानगुणदी}
धननैक ॥ यचगसमकुण ॥
वाभ्युपजास्वस्तिवाचनैय ॥ ०७ ॥
आगनगयावकर्णखसक्याय ॥
लहधनग्लववृथसगयक ॥
नासिचक ॥ उकायस्वाहा ॥ कस्मै
आशीर्वाद ॥

स्वाहाकगममेस्वाहाधिमाधीता
यस्वायस्वायंदा मने ॥ पुजाय
गयस्वाहाचिर्कविहगायादि
त्येस्वाहादित्येमयेस्वाहादित्ये
सूमणीकायस्वाहा ॥ मनस्वत्ये
स्वाहामनस्वत्येपावकायस्वाहा
मनस्वत्येवदत्येस्वाहापूष्
स्वाहापूष्पयथार्थस्वाहापू
षूनर्धियाय त्वष्टस्वाहात्व
ष्टुनीयायस्वाहात्वष्टयुवच
यायस्वाहा विष्णुवस्वाहाविष्णु
वनिरुययायस्वाहा विष्णुवनि
यिविस्त्रयस्वाहा ॥ नामकने ॥
सरुआननि ॥ मनाह्मिनिय
निष्ठा ॥ अन्नसकल्य ॥ दक्षिणा ॥
वाचन ॥ कलम आशीर्वाद ॥
न्यासयाय ॥ कलभर्तवलिनी
विसर्जनी ॥ कलभशिषक ॥
चन्दनादिआशीर्वाद ॥ दूकवि
य ॥ कोमानीदग्नि ॥ यूर्ध्वचन्द्र ॥
साखिथम ॥ थंकादिआदिन
वीकावकिप्रपूर्वगत्येकाससक्याय ॥
दानसङ्गिलहलगय ॥

सुखवर्तकप्रसाद्य कमलपनिवर्तय। गपित्वा
शुद्धीर्थं न दोषदा। निवाचकं १

मावाहाय ॥ ॥ ॐ निनामक
नली ॥ ॥ ॥ ॥

स्तुतीयमास रूलपासन ॥ अन्नपास्रयष्टमास
गदननर्नयष्टमास रूलपास
न अन्नपासनच कावय ॥
रुधूवद्रु यिनकासस ससाध
निवा मर्गदयकयवयाकाक ॥
याग ४ कमानस्तान ॥ कलस ॥
स (गन गग (गगुम कोमा
नी ॥ वलि ॥ वदिवद्रु ॥ कवा ॥
गवयिनिमृगनूलरु गय ॥ स
(गनस यलिलरु गय ॥ रास
गययवा खग्वउवा युरि मृ
लकाव ॥ गदमाला कलससग
य ॥ खान ३ ॥ आदित्यनकपा
षाणवच ४ सोम्यन (धेवव। क
रमक्षनकहूर्य ग्रीयर्लुव
धमवच ॥ पण्डा विगुन वि
द्या दजगन्धु राग्वि। लाह
गनेध्वनहूर्य रुर्निनाद्रु गधे
वच ॥ मीसिकवगथ कर्तु ॐ
एगागदमालिका ४ ॥ सिद्धा

धन्वकयूष्यच विर्यधुनाग
कणर्न। दृवकिगसमायूक
म (ध कन्दलयूनर्क ॥ सुवर्तु
नूयगामादि विदव गिय
कीर्तिगा ४ ॥ आदिपादिकु
मलेव सुनस्तानयदाय
य ॥ धतवसय ॥ थकादि
नयूष्यराजनयाय ॥ वाक्म
नस्यकिलगयूजायाय ॥ धूष
दीपजायसागुवाक्मयूजा ॥
भक्तिकय १०० ॥ मगरुगान
चायूजा ॥ केमानलासानावमृगा
रु ॥ स्वस्तिकसर्वसाचकीगय ॥
नमस्कृने ॥ मृद्यधिगुलखन
दाय ॥ भक्तिकस्वानविय ॥
स्वानगनक धूषदीयानक ॥
दीपलाहनका ॥ रनूलरु
विय ॥ चन्दनादिस (गनमृ
णावदि ॥ वाक्ममदिसयगि
निविय ॥ गवयिनिनिनत्वा

भक्तियुष्टियास्तीविया ॐ धो ४ ॥ नि ॥
मगरुगाचासगुलसाय ॥ २

य॥ यलथसामारु यितिनित॥
 आगनक्याय॥ कयुव(भयमन
 नाविकजआ दिननक॥ स्वसि
 वाक्यय(१०॥ वीचकवलवाय
 सियगिनमामयागं॥ वातास
 गनगयावकलखक्याय॥
 उया४ रुलिनी४॥ रुलयासनं॥
 उमनाहृतिनयतिष्टा॥ स(भ
 ननत्वाय॥ यलिलंदविय॥
 चन्दनादिस(भननगोदीद्विदि॥
 यदमालाविय॥ वाक्कलन
 नसंकल्य॥ जागुयूजायाय
 वाक्कलन॥ उगत्वायामि॥
 उदवस्यत्वा॥ उत्तम(नद्य
 रि४॥ उयुजायन॥ उमन्नय
 न॥ उमनाहृति॥ ॥ हंस
 याग्निकाय॥ जागुनत्वा
 य॥ स्वसिकथसामारुस
 जागुनय॥ आगनगय॥ थ
 काविगजानक॥ यचयभस
 मकुन॥ वाक्कन४ स्वसिवा

वर्य(००॥ स(गनधनिवाय॥
 वीनकवलकाय३॥ जारा मा
 मयार्ग॥ कलखकाय॥ धसा
 मारिगयाव॥ लखनदाय॥
 नासिचक॥ उमूनयग॥ मू
 नपागर्न॥ उमनाहनि४॥
 यगिष्टा॥ वासुददक्रिष्ण॥
 वाचन॥ कलसम्राणीवृदि॥
 कलनविनिर्नविमर्द्धन॥
 थकाविम्रादिनकलशशि
 षक॥ चन्दनादिस(गननम्रा
 णीवृदि॥ सरुम्रावनि॥ को
 मानीदगर्नि॥ दूरुचन्द॥ सा
 खिधाय॥ माचोचिर्गनन॥ वर्य॥
 यिनायबादानयाकयवा
 किक्कृष्टि म्रासनयादग॥
 जानकनदास्य॥ ॥
 वृगिरुलान्नयागर्नसमार्य॥
 सकलसपनिविष॥ ॥ ॥ ॥
 सगिकुदूर्नीकलशार्धननिर्मक
 नमाल॥ रुलअनप्रासर्नव॥ पाट
 दूरुल॥ पणिदूरुलठरितक॥

गगनरुलान्नयागनस्ययथा
 नरीक्येति ॥ गगनमयका
 गदिवलिन्दया ॥ गवयि
 निनिसयागटायागय ॥ सग
 नसयतिगुयालङ्ग ॥ वस
 यदुथकदूयाथे ॥ कथक
 दूआसनयाहावगयायूवा
 किनमारिदूय ॥ वाक्मणन
 कलसयूजायाय ॥ कथक
 दूयाथे ॥ जागुसमारिद्या
 रुय ॥ जागुनत्वाय ॥ मारि
 नकठखय ॥ मारिवागास
 गय ॥ यचगसआदिनन
 क ॥ उच्चिष्टकलखसका
 य ॥ विधिध्वयूजाधनक ॥
 थंका निनसमयविय ॥
 प्रथमदेहनायवापकमेवा

गगनरुलान्नयागनस्ययथा
 दिवसमायावायूवसिवा ॥
 यीतिदूजा ॥ वृक्षादूकाय ॥

कथकदूखनकर्मयाय ॥

पूनादिगआदिनवायूजाव

न ॥ यवदकयाय ॥ कृमधु

यसकमाजलासाजावदय ॥

स्वस्तिकासनयूवमखनगय ॥

नमस्विनादिलाकापवार ॥

सवदिकाकावाय ॥ नि

स्वासल्लगुलिवस्यगाथे ॥

चन्दनादिगुणीवदि ॥ यनि

द्वा ॥ यवदकधनक ॥ सरु

ग्रावनि ॥ मासधु ॥ लासा

लावदूसवजानक ॥ धन

कथकदूयाविधि ॥ ॥

सनिकदूवसयविधि ॥ वृक्षा

अष्टकलस ॥ नागध ॥ यदूय

द्विणी ॥ धीलक्ष्मी ॥ यिनाय

काय ॥ अनितिरुनितिकाय ॥

यवादकयाय ॥ वृक्षायूजा

यावक आवायनि ॥ लख

धनक विधिध्व ॥ कमा

स्वदिगसगय सरुआनविब्रुआस वायवकोनसत्यसि

कयाय कमानलालरुय नमस्विन वृक्षासुखीनगनक

धृष्टदीप ॥ श्री ॥ १

सर्वजन्मद्विकामः स्वदत्तप्रथमविराजः । स्वपथे स्थिरवाक्कान्तवृत्तकनः । विस्मयाद्वाक्काशवीर्यिनापश्ये विष्णुनाडीकनः । स्व । शभादेवांशिनका
मिहिरवक्त्रकाञ्चनदत्तः ॥ उं दधि विरात्पाववक्त्राः । उं वक्त्रादक्ष्णीः ॥ दुः । कन विष्वाङ्गवदाक्षिरासञ्ज्वाणस्थिः ॥ १

शुलपूजा ॥ हस्तार्थवचनदक्षिणवत्तमल्लमूयानविथ ॥

अथमाश्रयकनात्मकं बुद्ध्यादितानननकचन्दनादिधूपदीप
अथगंधादिमनसंगात्वात्ताननत्वस्यचन्द्रमण्डलनत्वा
यज्ञशीर्षाद॥१॥ गतामात्रमाश्रयकंनिश्चायः अग्निकंदस्त
कूयथिबलिभायूरामलगयनतउद्धादकन॥१॥

न॥ ॐ निवर्तयाम्यायूषन्ता
 शाययजननायनायस्योषाय
 मृषजास्त्यायसूवीययि॥ क
 नचुदनमनु॥ ॐ यनावयुग
 मवितादु न॥ सामस्यनास्तुव
 न॥ स्यविद्वान्॥ गनवा ॥ १४
 पवगदमस्यायूषमंजनदसि
 र्यथसं॥ चुद्य॥ संरुयकनि
 नित॥ यूवा॥ गमयलिमि
 मगय॥ यूनष्यन्धिमरा॥ गदा
 गव्य॥ ॐ सविताप्रसूनादवा
 ग्रायउदकुगगन्तु॥ वसावान
 संविय॥ ॐ दाद्ययिस्तु॥ कण
 यूष्यदुस्ववसिसवय॥ ॐ ष॥ १५
 गाय॥ यून॥ स॥ धन॥ ॐ ग्राय
 वंजमद॥ ग॥ १॥ गमयरा॥ ॐ
 निक्षय॥ यूनवृत्तवरा॥ ग
 दागव्य॥ ॐ सविताप्रसू॥
 ॐ दाद्ययिस्तु॥ ॐ डाष॥ १६
 य॥ ॐ निवर्तनामासि॥ ॐ निव

श्रुत्यामदवापदय॥ ॐ सविताप्रसूनादवा ॥ १४ ॥ कण ॥ १५ ॥ गाय ॥ १६ ॥ यून ॥ १७ ॥ स ॥ १८ ॥ धन ॥ १९ ॥ ग्राय ॥ २० ॥ वंजमद ॥ २१ ॥ ग ॥ २२ ॥ गमयरा ॥ २३ ॥ निक्षय ॥ २४ ॥ यूनवृत्तवरा ॥ २५ ॥ दागव्य ॥ २६ ॥ सविताप्रसू ॥ २७ ॥ दाद्ययिस्तु ॥ २८ ॥ डाष ॥ २९ ॥ निवर्तनामासि ॥ ३० ॥ निव

र्त्या॥ ॐ यनरु निव्यनादिव
 श्रुवकयन्धिमसूर्य॥ गनग
 वपासिवद्वन्मडीवैनेजीव
 नायसू॥ गमयस्यस्यय ॥
 चुद्य॥ गमयरा॥ ॐ निक्षय॥
 यूवकुडुहृषीकुदयत्कर्ण॥
 गमयरा॥ ॐ निक्षय॥ ॥
 कणरिदमनु॥ ॐ रुदक॥ ॐ
 रि॥ १॥ गग॥ कमानस्य निव॥
 दूव॥ विपुदकिर्णमाङ्गियग॥
 मृषससावकावयनिकगन
 च्छिनिनामास्यायू॥ यमावी॥
 ॥ मृपाननापिकचतुमलुल
 गयावकायमनु॥ ॐ मृदन्त
 यनिवय॥ नाविकननिषी
 विनासर्वकुदय॥ गमय
 रा॥ ॐ निक्षय॥ ॥ धनिवा
 गयावर्मस्वसवयक॥ कमान
 स्तानयावक॥ निवस॥ गमना
 चननवय॥ लासानाचरुय॥

दक्षिणा वजन वन्दनादि श्रुष्टा वीर सखाननिधिरिष्टा ॥ उपनयनादि विष्टा ॥ १०
 दृष्टय ॥ वीरियुजा ॥ वृक्षाद
 काय ॥ यवदकयाय ॥ दृष्ट
 कद्रुलसियाय ॥ पूनादिग
 आदिनमालकावायुजावन ॥
 यवदकसलीसालावदय ॥
 नृवर्चुनादि ॥ स्नानगनक ॥
 मगरुगानवानस (गनननद्या
 य ॥ सनरुदिकावाय ॥ चन्द
 नादिश्रीगोवर्दि ॥ मनाह गिन
 युनिष्टा ॥ सरुश्रानति ॥ मास
 धल ॥ लासालावर्थगायन ॥
 दसनजानक ॥ धुनिद्रुथूकद्रु
 याविधि ॥ ॥ सनिकद्रु
 याविधि ॥ वृक्षाकलसनागद्य
 यक यद्विणी गीलक्ष्मी ॥ व
 हिनक्षत्रादि ॥ यवदिगसथ
 यवय ॥ ॥ क्षामविधि ॥ यला
 गदु ॥ गीरावि सि ॥ कयटि ॥
 कालसावर्म ॥ यागयद ॥ मि
 चकिसिद्रुस ॥ मृगाल ॥ ॥

धमनरीडिकालेष्टा ॥ ३० ॥ ४० ॥ ५० ॥ ६० ॥ ७० ॥ ८० ॥ ९० ॥ १०० ॥

शा घना गाहानया लृष्टुलि
 डाहाश्रुलि ॥ वमु ॥ ॥ ॥
 निवसय ॥ ॥ ॥
 यिनायकाय ॥ अलिनिकाय ॥
 यावदकयाय ॥ वृक्षायुजा ॥
 यावक श्रुवायन ॥ यथन
 विधिध्वयुवदि ॥ सूचय ॥
 यक लिम ॥ नृमचून ॥ अर्थ
 पाणलखनहाय ॥ स्नानगन
 क ॥ मगरुगानवास (गननन
 लाय ॥ सूचलिमिनलाय ॥
 सूचय ॥ उकाठुलाठुगु ॥
 वकन ॥ उदाद्ययिस्ता ॥ को
 उ ॥ चन्दनादिश्रीगोवर्दि ॥
 चन्दमलुलनलाय ॥ मनाह
 तिनयुनिष्टा ॥ सरुश्रानति
 मासधल ॥ लासावलो लि
 विसयन ॥ स्वस्तिकसगय ॥
 चन्दमलुलनडलाय ॥ उय
 गनयाचक ॥ सरवाचक ॥

नवन्दनादिश्रीगोवर्दि सखाननिधिरिष्टा ॥

लसिवाचक ॥ स्नानयाचक ॥

॥ ॥ लामालावदययहसि

हामनसददिगगामसस्वसि

कासनसयूचमुरवनगय ॥

नवचुनादि ॥ दीयलाहन

का ॥ वमुवीय ॥ रुनिनिवु

य ॥ उगागानमिन्दु ॥ सनरु

दिकानकारवायक ॥ उग्राक

धु ॥ चन्दनादिग्राणीवदि ॥

गुनिनिनत्वाय ॥ उगिवाना

मासि ॥ हामानगल ॥ उगव

वाय ॥ पुमादयिदिनीविय ॥

वाधवनकुय ॥ सरुग्राजगि

मनाहगिनयगिष्टा ॥ मासध

ल ॥ उगुखानधि ॥ लामाला

वर्थगायन ॥ रुनिनिवजि

नक ॥ दधिलाजा ॥ उचिष्ट

चाय ॥ रुगिनकागाय ॥ ॥

गगामुनः ॥ गुनिकायकयति ॥

यथा ॥ विधिमकुल ॥ वक्रा ॥ गुरु

कलगाचर्चनी ॥ उपयमनक

वउत्तसिधपदाप्रअपमाया ॥ अपमयानिधुमूर्ति ॥ मूर्तिमानिनि

वासिग ॥ छिकर्तुसकानिधुगम्भेप्रक्रानमोमुने ॥ १

अस्मदरकमपुनयनीगभा ॥ अस्मदरकमपुनयनीगभा ॥ अस्मदरकमपुनयनीगभा ॥

गमादायगुनदगक्रियाक

यति ॥ गुननमि ॥ समरुवा

नि ॥ गगाश्नर्चनी ॥ गुरोद

गसधमादाय ॥ उगदवानि ॥

गुरोदगसमिधहाम ॥ उक

उकावगसादा ॥ उकीरुषी

शदय ॥ वृचिधान ॥ उरु

नाधान ॥ उपयमनकर्णद

सुर्वधन ॥ वदुय ॥ गगावदुमा

चम्यानय ॥ यरुसिदासन

स्थाकवगा ॥ गचापविन्द ॥

गुरुगर्वमाय ॥ वदुनयोमा

य ॥ गुनयुजा ॥ गुनवन्द

मासन ॥ दूर्य ॥ यादहस्ता

ध ॥ चन्दन ॥ यरुपवीत ॥

युषधूपदीप ॥ ददिग ॥ ग

गुगन्धादिगुनवगसर्वनि

वदयामिनम ॥ उमान ॥ द

सुप्रमाणमकुल ॥ कृत्वागन्ध

चन्दननायुदनी ॥ ॥ उ

क ॥ भनसंमार्जनी ॥ अंशुनादिपदाकाका ॥ वनादिनाथ

गामही ॥ कगापवित्री ॥ सर्वय ॥ किमथ ॥ मयल ॥ पयन ॥

जलनसिधनी ॥ अंशुना ॥ वक्रा ॥ वक्रा ॥ वक्रा ॥ वक्रा ॥

महासुन ॥ मदीसु ॥ निगाय ॥ नया ॥ गाय ॥ यरुकर्म ॥ २

भरवलाभोऽङ्गीरदाणवकृशभयात्राक्रांस्तु॥ वनर्गुंभया नाजन्मभोऽस्मिन्टाविहायमया, वैधससावन्निगुं॥ समस्तकाकाया॥ १८

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

मूक (गण) मूकनामगमार्दिश
 वक्रवायसि ॥ नकर्ण ॥
 उंर्यं दूकं ॥ उमतस्य (ग
 फीगयसयनस्य ध्यानीनकः
 सदमानाश्रुनागीः ॥ अमूक
 (गण) मूकनामगमार्दिश
 वक्रवायसि ॥ द्वितीयं
 थिः ॥ उंर्यं दूकं ॥ उमान
 समन्तमनूयन दिग्दया ।
 गतनिस्तमखलमा निखाम
 ॥ ॥ यनष्टविवेकाणां
 नर्ण ॥ तृतीयं थिः ॥ आवा
 यतिश्रुद्वर्ण ॥ उवविगुष्ट
 वेष्टव्यो ॥ वटः ॥ गितसि गय
 गीमन्तुददगधजय ॥ १० ॥

ॐ ति मूजवधर्न ॥ मथमदितीयरुणाय अलु
 कर्ण उं वक्रयर्णनी ॥
 उं विधाना ॥ ॐ नमः ॥
 गतिवा ॥
 गतामूजयं थि पूजनं ॥ उ
 वक्र (गनमः ॥ उम (ग्वदा
 यः ॥ उं अग्निमीठयूनादि
 गं ॥ उं नूदायः ॥ जीरुवदा

उं यवास्वसापनिभग्नोमसो (अ) यस्वनिजायमानसिवा ॥
 नसकवयउनय निमोदाननसाधवयन्ते ॥ ५

यः ॥ उं वत्वा ॥ उं विष्णुव
 २ ॥ सामवदायः ॥ उं अग्ने
 आयादि ॥ यूनग्नयणीवठ
 (इनयूजयः ॥ यतिगं थि ॥
 मूजवासागयगाजयः ॥
 गगायस्त्रायवीतमन्तुः ॥ ॥
 न्यामवत्वा मदा व्याहृतिम
 क्त (गधयः ॥ उं कानः ॥ यथ
 मगनी ॥ गयता ॥ द्वितीयः
 निस्त (थेवच ॥ अग्निर्दिष्टः ॥
 त्रितीयनागदवगा ॥ उं
 ममीववृण ॥ वदुर्थसामदे
 वगा ॥ उं मन्दवा ॥ यैव
 मयितदवगा ॥ उं आर्दयि
 तृन् ॥ वष्टवेवयजायति ॥
 उं यजायनन ॥ सकमसूर्य
 दवगा ॥ उं आकृष्ट ॥ अष्ट
 मवायूदवगा ॥ उं नववायू ॥
 नवमसवय (येव ॥ उं सक
 अषयः ॥ यूनग्न थि पूजनं ॥

उक्तार्थं कृत्वा नान्यत्वात् कथं वा कथं न स्य ननु त्वत्त्वं नान्यत्वात्
अजगत्वं वैधाय्यं हापवागं तर्हि कार्त्तिक ॥ ३

ॐ वक्रयज्ञानं ॥ ॐ विष्णुवना
 ट। मसि ॥ ॐ नमः शिवाय च ॥
 ॐ दिनध्यगर्कः ॥ गायत्र्या स
 कविर्गतिवाचय ॥ तगा
 पुनर्यज्ञाय वीर्गकमानाय
 दद्यात् ॥ मनुः ॥ ॐ यज्ञाय वी
 र्गयनर्मयविर्गयजायगेयस्त
 द्जयनस्त ॥ गायमय्य
 निर्मयगुर्गयज्ञाय वीर्गवल
 मस्तु गजः ॥ ॥ कृष्णजिन
 विय मनु ॥ ॐ विष्णुस्य च कृष्ण
 नृणं वलीयस्तु जायगे ॥ कृवि
 नश्यत् ॥ अनादमस्मिन् वचनं
 निविष्टः यनीर्गवाजिनं धदि ॥
 तगावर्मु दद्यात् ॥ मनुः ॥ यग
 सामायावायथिवीयमन्दाय
 वृहस्पतिः ॥ यत्नरगन्धमा
 विगयत्नमयनिययर्ग ॥
 गवियमनु ॥ ॐ यैवासूवा
 सायन्निवीगमागस्तुडत्तैय
 रावगिजायमानः ॥ र्गधीनासः

कवयडन्नकिमा (धम्म) मनसा द
 वयन्तः॥ यागयद्द वियमन्तु
 ॥ उया (गया) (ग) ॥ आचार्यः
 त्वष्टादिर्दु दया ७ ॥ वनोद्दे द
 उं गृहीत्वा पण्यमन्तु ॥
 उयामदु ४ यना यगदिदा
 यसाधिरुम्यां । गमदंयून
 नायववुम्भ (ए) वुम्भवचसा
 य ॥ कयटिविय ॥ उरुदा
 नमिनाद्गारादानागि ४ सु
 रगगदाग्ध्वन ४ रदाडग
 पुनस्तय ४ ॥ मिचकिमिनसु
 यकमन्तु ॥ उं गवडयावर्ग
 मदीयरुस्यनय्या । उरा
 ककुदिनव्ययी ॥ सुवर्ग
 नडागपुदार्न ॥ उदिनव्यन
 वाडषसाविलाक उराविन्दा
 उदिन ४ सूर्यस्य । आनादगं
 वनूगमिगुगर्तुकिगव्यकाथ
 मदिनिदिनिच ॥ कानिगुखा

ॐ यागयथाऽसामनास्तीर्यक्षिऽभानविवदत्ताऽनासा
महित्वमूरुमानेकमायस०६५॥१

नाविय ॥ उदीर्घायुस्त्रायव
 लाय ॥ नादानयाविय ॥ उच्च
 स्तिनः ॥ नु४ ॥ कणग्रुमुलिवि
 य ॥ उयविगुष्ट ॥ ॥ गग
 आवायुगिवदुस्तुडदकंद
 या० ॥ वदः य० निमर्तु ॥ पथ
 मस्तानं ॥ आयादिष्टामया ॥
 द्विगीयस्तानं ॥ उयावः गिव
 तमानसः ॥ गगीयस्तानं ॥
 गस्माग्रुनक्षमामवा ॥ वदः ॥
 गिवमिमियय० ॥ आवायु
 वडदकडि लिन्दीयगवद
 रुस्तु गकुलवदसुयमिदि
 ग्यपुदिय० ॥ मनु४ ॥ उड
 दृष्टिजागवदसं ॥ उविर्गदवा
 नी ॥ उच्चइदवेदि ॥ अूनया
 अवा सुयनिनीदली ॥ गगा
 वदः गिलकाथमिमामुक्ति
 कावन्दनदोषय० ॥ मनु४ ॥
 अग्यकान्तवथकान्ते ॥ गगः
 गिलकं कानय० ॥ मनुकु ॥

उयदयकथ्य ॥ गगावदुद
 यावलरनं ॥ मनु४ ॥ उमम
 वगगदुदयन्दधामिममवि
 रुमनचिर्गगग्रु ॥ ममवाच
 मकमनाशेषवदस्यगिष्ट
 नियनकुमर्तु ॥ यूनवावायु
 ववम्वानि^{कोनामासिष्ट}दद्विगदुस्तु
 गृहीत्वापुष्टुग ॥ कोनामासि ॥
 वदुनरुवन्दया० ॥ अमूकग
 गामूकनामगमादिगा ॥ आवा
 यः य० ति ॥ कस्यत्वं वम्ववायु
 सि ॥ वदः य० ति ॥ गवगः ॥
 यूनवावायुविद्या० ॥ नुस्य
 वम्ववायुसि ॥ वदः य० ति ॥
 गवगः ॥ यूनवावायुचिचुति ॥
 अगिवावायुसि ॥ वदः ॥ ग
 वगः ॥ आवायुविदति ॥
 अरुमावायुसिवासो ॥ व
 द ॥ गवगः ॥ आवायुविद
 दद्विगदुस्तु गृहीत्वा उद
 कंदया० ॥ गगआवायुः ॥
 कृष्णकान्तव

वामस्त (ध धी) ॥ वदन म ॥ वा
 मयष्ट दि ॥ नासिकायां धी ॥
 वक्ष्यो ॥ युवाम्मिध यो ॥
 ग (उ न ४) ॥ पूर्ववक्तु य ॥ दक्षि
 णवक्तु च ॥ यन्मिमवक्तु द ॥
 उरुवक्तु याग ॥ मृष्टि र्मुक्तु
 व ४ स्व ४ ॥ २४ ॥ ॐ त्र्यम्ब (म ध
 नं ॥ वदनादकं गृहीत्वा दक्ष
 नासिकेयौ नीत्वा वामनासिकया
 नचय ॥ ॐ निषण्णवयदानं ॥
 गंगाभयणीयदानं ॥ ॐ र्मुक्तु
 व ४ स्व ४ गत्सविदुर्विर्ध ॥ य
 नदिगीयसाविणीयदानं ॥
 ॐ र्मुक्तु व ४ स्व ४ ग (म दिवस्य
 धीमहि ॥ यनस्तु नीयं सन
 स्वगायदानं ॥ ॐ र्मुक्तु व ४ स्व ४
 धियायान ४ युवायया ॥

ॐ निमयणीयदानं ॥ वदमक्षा
 गतश्रुति ॥ ॐ वदमयज्ञानं ॥
 ॐ विष्णुननाट ॥ ॐ नमः ४ गिरि

वाय ॥ ॐ निषिक्तत्वेन (म धनं ॥
 श्रुतिभयिण्या ॥ वाहनिर्म
 पधव ॥ १०४ ॥ ॐ नवगयगा
 गगनं निमसा मायवृता दध
 तं नृसो गगनं निमसा माय
 वृता दधन जागता गगनं नि
 मसा मायवृता दधना माना
 ५ सा मायं गच्छति मसा माय
 वृता दासा कासि मुक्तु र्मुक्तु
 विविक्तत्वा विविक्तु ॥ यति
 श्रामनाह गिन ॥ गयणीय
 दानं ॥ ॥ श्रावय ४ वदार्
 र्मुक्तु गृहीत्वा अग्निमनुययुद
 दिर्णक्य ॥ ॐ नमः श्रावय ४
 दक्षिणरागवदमयवगय ॥
 गतवदमय ४ नीक मय्य ॥
 श्रवयाणोदकनामिपुशक ॥
 र्ववका र्मुक्तु र्मुक्तु ॥ मनु ४ ॥
 ॐ नमः ४ वदमय ४ वदमय ४ सीमा
 कनूत्वादा ॥ १ ॥ यथात्वम (म

मन्त्रि नमः किवावने ॥ ०७

ॐ वरुणदीक्षा माध्यानिदीक्षया प्राणिदक्षिणीं दक्षिणां दक्षि
 माध्यानिद्वयासंयमायन ॥ २

नाजगत्प्राणिदक्षिणीं सावित्री ॥ वदमय सावित्री जगती

सवैश्यामयनी ॥

गुणवः गुणवान्मुसिस्वादा ॥ २ ॥
 प्रवमाः गुणवः सोऽवः संमा
 कनूस्वादा ॥ ३ ॥ यथैतद्वद्वानां
 यरूयनिधिया मुसिस्वादा ॥
 ४ ॥ उऽवमदमनूयात्तद
 स्यनिधियारूयामः स्वादा ॥ ५ ॥
 अग्निप्रशस्य ॥ ॥ उक्तिस्त
 मिधमादधानि ॥ कर्तुम्यष्टाज
 यति ॥ मनुः ॥ उऽग्नेमसमिध
 मदाष्विदगजागवेदसः । य
 थैतमग्नेमसमिधममिधसि
 उवमदमायषामधयावच्च
 षजयावगुसिर्वस्त्वस्यन
 समिधः जीवयन्ममावाया
 मध्यादमसान्यनिवाकविष्णु
 र्यगस्वीगजस्वीवज्रवच्चस्यनि
 दारूयामः स्वादा ॥ अग्निप्र
 शस्य ॥ उर्वदिगीर्य ॥ तथा उ
 नीयमयि ॥ यूनः यूववित्यच
 काश्चिदुह्या ॥ अग्निप्रशस्य ॥
 उऽवमदमायषामधयावच्च
 षजयावगुसिर्वस्त्वस्यन

मन्निदग्नेनिधाय ॥ उमक
 नः अग्ने ॥ गतागवयनिदग्नेवि
 दलाकपालेयः स्वस्वमनुष्य
 गाहनिदया ॥ ७ ॥ उममूहवान
 यस्वादा ॥ गतः ॥ ८ ॥ सूय्यादि
 ०० हृदवगात्याद्यगाहनिद
 या ॥ ७ ॥ स्नानविगेषवदगया
 दनाहनिः ॥ गताव्याहत्याद
 नक्षत्रहृया ॥ ७ ॥ सकनः अग्नेम
 मिधः ॥ निमवाद्यगाहनियुक्त
 उर्वजिलाहनि ॥ गिलाहनि
 हानियुक्तुविवरहृया ॥ ७ ॥
 उऽवमदमायषामधयावच्च
 षजयावगुसिर्वस्त्वस्यन
 समिधः जीवयन्ममावाया
 मध्यादमसान्यनिवाकविष्णु
 र्यगस्वीगजस्वीवज्रवच्चस्यनि
 दारूयामः स्वादा ॥ अग्निप्र
 शस्य ॥ उर्वदिगीर्य ॥ तथा उ
 नीयमयि ॥ यूनः यूववित्यच
 काश्चिदुह्या ॥ अग्निप्रशस्य ॥
 उऽवमदमायषामधयावच्च
 षजयावगुसिर्वस्त्वस्यन

+ अंभापोज्योतिरसोमृतं वक्ष्ये भूभुवः स्वरोमः इति स प्रगा
वगायत्री तदेव द्वितीय गायत्री ज्ञेयम् ॥

यन्निर्दयः ॥ बुद्धा कल आदि
न सी (ग) या न न आदि नि विय ॥
(तमस्यैवाकोल सैवैकान्)
यः ॥ अ (न) नूतन रा (ग) उय
विष्य पूनवा वाय विव्या ॥
अधस्यन क नू ॥ वदः वारः ॥
पूनवा वायः ॥ पुनराग्र
दानलवर्ण ॥ वदः वारः ॥
वाक्मय वृजा ॥ गतिक ॥ योहि
क ॥ दिन वृजु ॥ उ वृजु द
वि ॥ गगस्यन दग वडि
ग वद नयना द सैवैक य
॥ पूनय ह्वाय आवाय
न ॥ गगा वदः अरु नि कर्म
पूर्व विव्या ॥ ॥ गगस्य नि
क ॥ पृष्टिक ॥ यवक्षन्यादि
क ॥ अन्नसं कल्प ॥ दक्षिण ॥
पृष्ठ ॥ उ आवाय स्वनि ॥ आ
ससा ॥ आगी वदि ॥ वलि वि
सकुनि ॥ यरु वि सकुनि ॥ अरि

वक्त्रा प्रसीत १

गय ॥ वन्दनादि सगुण आनी
वदि ॥ आनति ॥ साखि धाय ॥
गगा वदः वृक्ष मेखन रि
का कय ॥ मागा अर्न दया
॥ वदः य ॥ मागु ॥ रि
का मदि ॥ उ स्वकि ॥ रुमा
उदकं निदक्ष ॥ उर्वक मे
गवान्तर्यय ॥ जलनव
तुन मुलि खित्वा गदय निडा
दन माला निदक्ष ॥ गगा रु
मोजलन मिचय ॥ मनु ॥ उ
अगिच सार्थ रिषि वामि ॥ गगा रु
वलि यदार्न ॥ उ य धियन म ॥
उ य धी नाजा य ॥ उ वृजा यग
य ॥ उ गिय ॥ उ अन्न य ॥
रुग वलि यदार्न ॥ उ युव यग
य स्वादा ॥ उ युवन यग य स्वा
दा ॥ उ रुगान यग य स्वादा ॥
अन्न यग य ॥ मनु ॥ उ अ
न्न यग ॥ आया गन मनु ॥
उ अन्न यग निरुग यग य

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

2072 I

विमान (क्षेत्र) वगुर्वादिना गुर्विज्ञापानिगमया । अस्मानमयपिगडं च । दहिमस्मानरुक्मिगः । विगुद्वदहसलिलं पापमलप्रवृत्तिर्न ॥
 गुनगाव निमिरुन दहतात्पापमयैकत्वा । भययापितप्रवृत्तिर्न । वृगमगत्स (ह) रं च । संप्रवृत्तसुक्तमीगव ॥
 शाल (ह) भवसमायुक् । विप्रस्यवाकर्मवगन ॥ ॥ एकविंशतिमयस्य विवाहदशसिद्धिः । विनायैववगाय (ह) । क्षयासद्यक्तु
 कानय ॥ ॥ नि यवा ॥ ॥ दकस्यप्रमाणं ॥

विमान (क्षेत्र) वगुर्वादिना गुर्विज्ञापानिगमया । अस्मानमयपिगडं च । दहिमस्मानरुक्मिगः । विगुद्वदहसलिलं पापमलप्रवृत्तिर्न ॥
 गुनगाव निमिरुन दहतात्पापमयैकत्वा । भययापितप्रवृत्तिर्न । वृगमगत्स (ह) रं च । संप्रवृत्तसुक्तमीगव ॥
 शाल (ह) भवसमायुक् । विप्रस्यवाकर्मवगन ॥ ॥ एकविंशतिमयस्य विवाहदशसिद्धिः । विनायैववगाय (ह) । क्षयासद्यक्तु
 कानय ॥ ॥ नि यवा ॥ ॥ दकस्यप्रमाणं ॥

२०१२. I

तिकावाधवनचूय ॥ गगादग्ग
 पाटनादग्गि ॥ वृद्धवृद्धा ॥
 गगनिक पृष्टिक ॥ यवधान्या
 दि ॥ अन्नसंकल्पदक्षिण ॥
 मंजवपागर्न ॥ यविणमाचर्न ॥
 वृद्ध ॥ उदवागग्ग ॥ उग्गया
 यस्व ॥ अग्गमग्ग ॥ अग्गी वदि ॥
 यरू विसर्जर्न ॥ वृद्धा कलग्ग
 गिषचर्न ॥ चन्दनादिग्गी
 वदि ॥ कलग्ग द्वाय ॥ वृद्धा
 लखनलय ॥ अग्गिषक ॥
 वृद्धा द्वाय ॥ यिनाय द्वाय ॥
 वृद्धा राजर्न ॥ वृद्धा वल्गदि
 गदग्ग ॥ अग्गि वदानम्वि
 धिस्समाफ ॥ ^{वाक्काद्यमुखनवदप}
^{० कुर्यात्} ^{सायका} ^{नित्यसंस्था} ^{अग्गानिकर्मकुर्यात्}

अथ अवलीकर्मकुर्यात् ॥ ॥
^{नित्यस्नानपात्रसंस्था} ^{अग्गानिकर्मनेर्धक}
 वृद्धर्नया स्नानमाचर्न ॥ ^{मग्ग}
^{मग्ग} वृद्धर्नित्यकर्मकुर्यात् ॥ गगाग्ग
 चाय्यगियरू विधिर्मगर्नदत्ता ॥

वाक् ॥ अवलीकर्मविनिवर्त
 नार्थं सूर्यायिग्गानिम ॥
 आचार्यगवदनामदग्गवली
 कर्मकुर्यात् ॥ उग्गत्वायामी
 त्यादि ॥ कलग्ग एसकम
 बीन् वृद्धय ॥ अग्गगग्गदि
 ॥ गगादवादीनव्यय ॥
^{सधिनव्यय} यवाक्कगान्धना ॥ वृद्धना ॥
^{रुल} यिगवि विद्यमानकववा
 लादीनव्यय ॥ अग्गगग्ग
 दि ॥ गगाग्गवाय्य ॥ कलग्ग
 कर्मकुर्यात् ॥ यध २ विधि
 मन्त्रकलग्गवर्न स्वस्वत्य
 वदन ॥ अग्गयदासर्न ॥
 अग्गिदग्ग कुर्यात् ॥ अग्गिना
 म ॥ उग्गसमग्गवाग्गयस्वादा ॥
 यववान्गनकद्यगादग्गि
 तिलादग्गि विदत्ता ॥ कल
 गपतिष्ठासंख्यादग्गि ॥
 वृद्धवग्गदल ॥ अग्गिवासा

[illegible]

ॐ॥ जयमगुलसार्पकथ्यति ॥
अथयदासनान् अग्निदण्डिया ॥
अग्निनाम ॥ मृग्याग्नेयस्वाद ॥
घृणादूति ॥ घृणादूतिवृष्ण ॥
तिलादूति ॥ कलशयतिष्ठ ॥
संख्यादूति ॥ ^{यथाकर्म} बदमानय ॥
^{अंशगुणश्रवणादि} मरुवाविकर्मकथ्यति ॥ ^{तिलादूतिवृष्ण} रसम ^अ ^{संसा} ॥
^{अथगुणश्रवणादि} तिलकार्क ॥ तगायरुसाक
जगागुगुनानप्रवृवत्स
गुलकथ्यदिदृ ॥ अगुगंध
दि ॥ दसांडलिं वद्धाय ० गिव
दृ ॥ वद्वचयवर्गप्रवृ वगा
नवितमूर्तम ॥ एतदादगवर्षा
तिखविर्गत्वदुर्गमया ॥ हान
वृद्धिर्वदददा अगुगंधदिद
दक्षम ॥ वापरावसर्वरुवग
मार्ककवृक्षम ॥ स्वसीतियनि
वचनी ॥ वदृ ० यति ॥ स्त्रीमि ॥
स्त्रादि ० तिगुवृदनि ॥ यून
नाचाय ॥ इल्लनरागवदृड

उगाध्याजहाप्रियेयचंतएतयः प्रतिष्ठागोक्षुप
गोक्षानयुधानोसामवलोविजलावृद्धादि
दिहतागुगंधादि ॥ योरेचनसामिहृदयनि
सेचनसामिकल्लनरागवदृड ॥ त
कनरागसंसायकगमन ॥ नेवपु
वस्तुगंधाद्यवचनीकथ्यति ॥ तिये
० ॥ आचार्यसामुपाणग्रह
कलशमदकसार्क ० गृहीत्वा
निदध ० ॥ एतजलसमूदाय
दिय ० ॥ मनु ४ ॥ पुथम ॥ ग
व ॥ द्वितीय ॥ डय ॥ गज ॥
एताय ॥ मयूषा ॥ वदुथ ॥
तुंमनाद ॥ पंचम ॥ डंस्वर ॥
षष्ठ ॥ ० विनूज ॥ ० सकम
॥ ० सनूज ॥ अष्टम ॥ ०
नियदा ॥ धर्तखनसम
दयार्तगन ॥ मनु ४ ॥ ०
गंविडादागि ॥ ० लघ्वस्त्रि
न ॥ यनसनादकनषटि
काथननवदृमयदृणी ॥
मनु ४ ॥ याचावनसवृका
मि ॥ गमुपाणनिवाय ॥
अग्निविचनमनु ॥ ० गना
दमशिषिश्चमियगमन

दशपात्रममदवाधमविमलमधुप्रभा
प्रथमवयमदिखनगवानाममाजुदि
तथह्याम १०

असवन्न वचसाय वलाय
दीयायां दीयायां नायायना
यथायायुकाय अयचिखे
यनामीमक लं गयनायामम
नामयन कान शिषिचिनि य
नमाष्ट थिवी मदीय दानक द
स्वनायमगनामा शिषिचिनि
॥ पुनत्रय दल मकुः ॥ ७
यावाचना सुवगृह्णामि ॥ ७
ननवम शिषिचागियेयन
सवन्न (७) वन्नव वसाय ॥
पुनत्रय दल मकुः ॥ ७ या
वाचना सुवगृह्णामि ॥ ७ पुन
त्रियमद्वयना यनावमगा
मगा ॥ यनाकावयु षिच
गा यदागम विर्यन ॥ पुन
त्रयलमकुः ॥ ७ यावाचना
सुवगृह्णामि ॥ ७ अथादि
ष्टा ॥ पुनत्रय दल मकुः ॥
७ यावाचना सुवगृह्णामि ॥
७ यावः निवगमापम ॥ पुन
मकुः १

पश्यदली ॥ ७ यावाचना सुव
गृह्णामि ॥ ७ तस्मा अत्रमाव
वा ॥ पुनत्रय दली ॥ ७ यावाच
ना सुवगृह्णामि ॥ ७ वृक्षामय
दली ॥ ७ यावाचना सुवगृह्ण
मि ॥ ७ वृक्षामय दली वद ॥
तदननन वदया वसुकाठाय
वृक्षीन ॥ ॥ मूलवला ॥ ॥
मकुः काठाय निवदर्थ काम्य ॥
मकुः ॥ ७ उदरुम ॥ ७ दलुवद
य निमिज ॥ ७ दलुवद निक्ष
य ॥ ७ वृक्षीनिधीरि काठाय
निक्षय ॥ ७ अनदमय निक्षय
॥ वदनाचम्य ॥ अदियाय अ
अलि वदुडद काठालि दिय
७ ॥ मकुः ॥ ७ उदरुजुजुद
नीन्दा मरुदियका पातियवि
तिनका दगम निनसिदगम
निमाक्वि विदनागमया ॥ प्रमग
यम ॥ पुनत्रय दली लिदि
य ॥ ७ उदरुजुजुद निन्दा

प्रमग
यम ॥ २

मनुदिः श्रुद्धिवायावशिन
 म्मागदिवायावशिनम्मागम
 निवसिमिगमनिम्माक्विवावि
 दन्मागमय ॥ द्वितीय ॥ यून
 नूदका। जल्लिद्विय ॥ उउय
 डाउरुषु निन्दा मनुदिनम्मा
 ग सायजावशिनम्मा सदसुस
 निवसिमदसनिम्माक्विवावि
 दन्मागमय ॥ ॥ ०० तिगुणी
 यजिलिमादित्यायदया ॥
 गगावद्वद्विउर्न ॥ गदन
 गनवद्वमगिनमाद्वय ॥
 गगावद्वद्वरुं सस्य द्वाग
 गससगाजनउदकधत्वा
 यरु क (उ) निधायदधिति
 ला (व्यग) या मयति ॥ गगस
 नादकनवद्वद्वय ॥ गद
 ननननायिकनकगनखा
 उदय ॥ उद्वरुनिकावय
 ॥ य (थ) र्गलिलेन सान
 कय्यद्वद्व ॥ उउम्बनगद

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ताममनसावक्षमि लियाय ॥
 मयि ॥ ॥ अथ काकुतिनदी ॥
 ॐ अलंकृतमसिरुयालक
 नदीरुयाम ॥ ॥ अथ उरु
 नक्षत्रमनु ॥ ॐ वृत्तमसि
 कनीनकध्वद्वमसिचद्व
 मदिदि ॥ गगनात्तनादय्य
 मवलाकनद्वय ॥ ॐ नाचि
 ब्रुवसि ॥ गिलदिल ॥ ॐ यूज
 निवधमनूष्यचननं यनित
 म्ब ॥ नाचननाचनादिवि
 ॥ ॥ कृष्णद्वमनु ॥ ॐ
 वृत्तमनुदिनसिवाया
 नावानकधदि ॥ गजसायन
 सामामर्तधदि ॥ ॐ यानद
 गद्वमनु ॥ ॐ यतिष्ट
 विष्णुमायार्त ॥ यादया ॥
 यविधाय ॥ कृष्णवियम

[illegible]

वदमूयवलयः ॥ आहूतिया
याय ॥ ॥ वाङ्मयदृष्टा ॥
भक्तिक योद्धिक ॥ यवधान्या
दि ॥ अन्तर्माकल्य ॥ दक्षिणा ॥
पृष्ठ ॥ आसंसा ॥ आणीव्यदि ॥
॥ वलि विसर्जने ॥ कलभारि
षकः ॥ चन्दनादिसमुदागीर्वा
दः ॥ यरू विसर्जने ॥ सकल
सर्वदूतसमुदागीर्वादिनविय ॥
॥ निसमावर्तनविधिः ॥
जम्बूकेणायामायाभजमानस्यमसुसमावर्तनावर्तुर्थदिव
सग्रीसृष्ट्यावलीकनग्रासृष्ट्यप्रजाकर्तुः ॥ ॥ ॥
ताम्रपात्रगुरुयस्यनकाचदनगरिगुरुनायकलमात्र
कीर्तनानाद्येवाकर्तुः ॥
गतावदनयद्रुतासृष्ट्यमसा
सर्वगयाय ॥ चतुर्थदिवस
सूर्यदर्शनकथ्यदिदृः ॥
वृद्धाद्युदयकृत्तनयित्वा ॥
वसुधाकाशवदसूर्याद्यदि
द्या ॥ स्वयंरुनसि ॥ सूर्या
वलीकर्तुः ॥ गतावदृष्टाना
(प्रधानाग्निवर्षायाश्चसिवर्षाभदहिसूर्य
स्याहमन्वावर्तुः ॥ सूर्यदर्शने ॥ ॐ आहूत ॥ सा
५१

दिग्दर्शक्या ॥ तत्त्वत्वादि
 नायक्यं गृह्यन्ते कृत्वा गुर्व
 वार्यन्ते गृह्यन्ते कोमान् विदुः यः ॥
 वराध्वननाद्यानी चर्दिदीय
 त ॥ समय ॥ कोमान् विदुः
 यः ॥ मांसमदिगशाजनकाव
 यः वदू ॥ वास्तवशाजन ॥
 नृनिस्तृय्यादिष्टवगविधिः ॥

श्रुथविवादकर्म ॥ ॥ दिव
 सस्थानकर्मण्योपि यथा ॥ वि
 वाददुष्टदुष्टवाग्म्यार्थकादि
 आदिनलसिपाय ॥ वायुजा
 याया ॥ विवादादग्न्यायुदक
 अह्नयाय ॥ र्थकादिननर्वक्तु
 नादिलाकायचानयाय ॥ मन
 रुदिकावाय ॥ चन्दनादिप्रा
 नीर्वादि ॥ यतिश्च ॥ मरुभा
 नति ॥ मासधर्मे ॥ इमनजान
 कर्त्तव्यवर्चन ॥ इति इमनः ॥
 उक्तिश्चकलेखकाय ॥

हृथकूद्रयाविधिः॥ मंतिक्
द्रयक्रुविधिवसय ॥ वक्राभ्र
द्वकलणवाय ॥ शीलक्ष्म य
द्रयद्रिणी नागर्घ स्थापन
^{शिलायस्तुतिर्नगय ॥}
याय ॥ शिनायकाय ॥ अनिनि
^{शालीनिकुचिनिबल्लमलुपद्रुगयन ॥ धंकालिनया}
रुनिनिकाय ॥ यवोदकमानाय ॥
वक्राभ्रद्वकलणपूजायाचक
निवाचायन ॥ र्धधनविधि
र्थपूर्वादिन ॥ सूक्ष्माय र्ध
^{मलुपद्रुगयने धंकालिन ॥}
कलिम पूर्वमुखेन स्वस्तिका
सनस्तित्ता ॥ नर्वचनादिलो
कायचात्रयाय ॥ गलावनाद
न ॥ चन्दनादिग्राणाद्यादिः ॥
सरुभानति मनाहृतिनय
तिष्टा ॥ मासद्येल ॥ नडनड
^{मलुपद्रुगयन ॥}
यतनयाचक ॥ लूसियाचक
माण्डूयक ॥ अन्यवलुनति
^{विधिः}
यक ॥ सिद्धय ॥ यादलि
^{लीसालाय}
गालनसङ्ग पूर्वमुखेन स्व

सकृदपि मरुर्गो गात्रासु लब्ध्वा प्राहिणनरुक्कालिविनिर्वाय ॥ भगवन् २
वन्दनादीर्वादि सत्यभानिप्रतिष्ठा ॥ २८ वध ३२ ॥ भगवन् ॥ क्रिया ॥
नवनपाय ॥ वक्रासर्वाङ्गिके पादार्थादिस्मिन् ॥ ५ काल ॥ ३२
मरुर्गो गात्रासु लब्ध्वा ॥ सकृदपि ॥ ३३ का ॥ ३४

इमलुलनलाय १३

ब्रह्मासत्त्वात्तनक्षत्रपरीपरुलगाभलनेवद्यमीलजप
स्वाप्रमज्जुलंयागुस्तीक्ष्ण॥२मगरुतावाहगुनंताय२

पूषराजनी ।

सि कासन सचाने ॥ नृवचुना
 दि कोलो यचान का नय ॥
 नृगन वसुन गिय ॥ रु निनि
 दाय ॥ ^{उं गान न मि ॥} स न र न्दि कान का षा
 य ॥ ^{उं गान न मि ॥} च न्द ना दि आ गी व दि १ ॥
 या न द्वा ॥ ^{उं गान न मि ॥} व मा द यि टि नी वि
 य ॥ ^{उं गान न मि ॥} अ नि नि द्वा य ॥ दा सा न
 द्वा य ॥ ^{उं गान न मि ॥} वा धा व न च्च य ॥ रु अ
 न गिय ति द्वा या य ॥ मा स ध ल
 ॥ ^{पूर्व ति मूर्ख स्य सि कासन क्लित्वा ॥} ला सा ला व ध न ग य न ॥ रु नि
 नि व जि न क ॥ ^{वृक्षा दि आ गी न य ॥} द धि ला जा ॥
 उ च्चि ष्ठ ^{कलक} का य ॥ रु नि नि का
 टाय ॥ ॥ ० ॥
 ध न क न्या या वि ढी व शाय ॥ मा ल ॥

गंगाजामाणमनुर्णिक्रियति ॥
 गुणिवयक ॥
 अचम्यसृष्ट्याद्यद्वयति ॥
 अथादिवाक्य ॥ अस्मत्पत्नी
 कन्यादाननिमित्तं कर्तुं प्रा
 मृष्ट्यायि अर्घ्यं नमः ॥ ७ ॥

वृष ॥ गायत्रीमन्त्रं न्यासं कृ
 त्वा जलपात्रं पूजय ॥ आत्म
 पूजां विधाय ॥ जामातृविष्णु
 देवगाय ॐ दमासर्तनमः ४
 र्घ्यं २ ॥ पर्वपादाय नमः ४ ॥ पू
 र्घ्यं २ ॥ दक्षार्घ्यं २ ॥ चन्दनं २
 यक्षापवीणकपूरं २ ॥ धूप २ ॥
 दीप ४ ॥ दक्षिण ॥ अर्घ्यं
 क्षदि ॥ ॥ जामातृनयनसु
 लंकाय ॥ आदोक्षणनिग
 यनरुमीसमाङ्गनी ॥ ॥
 उयनाविष्णुपदाकानावना
 दनाद्वगामदी। सूयविणादि
 सर्वं किमर्थमनूलयय ॥
 रुमीजलनमिचय ॥ उयना
 ॐ नृववदोष दगादेणामदा
 मना ४। मदासुखं विनायुधीन
 योग्याय नमः ॥ गन्धच
 नदननायुदोष ॥ उमधूकट

यनमः॥ॐ वसुधै॥ॐ वाना
 धै॥ॐ वृत्ता॥ॐ वाम
 धै॥ॐ मन्त्राल॥ॐ
 वृत्ताय॥ॐ मन्त्रय॥ॐ य
 माय॥ॐ निर्मणाय॥ॐ वन
 णाय॥ॐ वायव॥ॐ वन
 य॥ॐ वीणनाय॥ॐ विष्णु
 व॥ॐ वन्त्र॥ॐ जयाय॥
 ॐ विजयाय॥ॐ मन्त्रिणाय॥
 ॐ मन्त्रिणाय॥ॐ जगि
 न्य॥ॐ सुगिन्य॥ॐ मादि
 न्य॥ॐ मन्त्रकव्य॥ॐ म
 धाजागाय॥ॐ वामदवाय
 ॥ॐ मन्त्रावाय॥ॐ नत्य
 न्याय॥ॐ वीणनाय॥
 ॐ वन्त्रमन्त्रलाय॥ॐ विष्णु
 मन्त्रलाय॥ॐ वन्त्रमन्त्रला
 य॥ॐ मन्त्रमन्त्रलाय॥
 ॐ वन्त्रमन्त्रलाय॥ॐ मन्त्रि

मन्त्रलाय॥ॐ जामातमन्त्र
 लाय॥॥ मन्त्रादनादि॥
 जायमान॥॥ॐ सर्वदिव
 मयस्वदि सिद्धगन्धर्वकि
 नना॥ॐ वृत्ताद्यालाकपाला
 ध्व जयाद्याष्टकमात्रका॥
 मन्त्राजागादय॥ॐ वन्त्र
 धाव्य जिदवगा॥ॐ जामागवि
 धून्त्रपासि साम॥ॐ मन्त्रि
 वव॥ॐ मन्त्रय॥ॐ जिदवगा॥
 मन्त्रददव्यवस्तिगा॥ॐ मन्त्र
 लायनमन्त्रय सर्वगत्वाधि
 पायव॥ॐ मन्त्रि॥ॐ मन्त्रि
 य विष्णुनृपायवेनम॥
 मन्त्रगन्धदि॥ॐ दक्षिण॥ॐ जा
 मातुनामन्त्रमन्त्रलायनवि
 क्षेपसर्वमन्त्रिपूजमन्त्रु॥
 ॥॥ दक्षायामन्त्रुलिव
 धीमन्त्रुन॥ॐ मन्त्रु ॥

उयदित्वयनिगानस्या दश
दाषविवर्जिगः। उर्यकन्या
यदास्यामि दवानिमुनर्सनि
(क्षे) ॥ **॥ जामागाय० ति ॥**

उयदिकन्यागु(भयना दशदा
षविवर्जिगः। गदादयतिगु
क्रामिदवानिमुनर्सनि(क्षे) ॥

स्वसूत्र४य(०मर्तुं ॥ उग्राम
नुगदगाद्यस्मिन् सूचिर्नम
मनाशव। यंचरगान्मक४सा
की ददामिकन्यकामिमां ॥

जामागाय० ति ॥ ॥ इति कल
विष्णुष्टीकः ॥ स्वसूत्रायामुपिकन्य
कां। अथर्वय निगुक्रामि
मुनर्सनि(क्षे) ॥ ॥ स्वसूत्र४

य(०मर्तुं ॥ उग्रदिनसूनक
गु सूयागकनगमनिग। य
स्मिन्दिनविवादस्या रुदि
नंविजयीशव ॥ ॥ स्व
सूत्रगमलुलसचोरुस्वानडा
रुतय ॥

उग्रामनिगामिजामागमया
पूथानवर्द्धनी। कन्यादानेष
दास्यामि अथमविजयद
न ॥ ॥ **अथवनादकल्य**

त्यादि मासनदग ॥ अमन्य
गीकन्यादानवलायां ॥ उ
गस्मिन्कालनिमान्नि(क्षे)

स्नागस्नागाद्यवागिनि। अथ
(इयतिगः ॥ क्रीव विगागुर्य
यकास्यति ॥ ॥ स स्वानडि

त्रिक्लायगा ॥ मलुलसचोरु
सकगादु जिनवियगां ॥

स्वसूत्र४य(०मर्तुं ॥
उकन्यादानेष निगुद्यगां ॥

जामागाय० ति ॥ ॥ अथर्व
यतिगुक्रामि ॥ ॥ स्वसूत्र

गमलुलविसर्जनी ॥ सादी
थय ॥ ॥ **जामागास्वसूत्र**

गिषकंद्याति ॥ कन्यादाना
मनुगनिमित्तार्थं अतिषक

उंउदयं ॥ यथाकिददिष्टा ॥ ३ अथमय ३

समूहं लभेत् ॥ उदवस्यत्वा ॥
उयदयक ॥ उर्वयविष्टदा ॥
आगीवदिष्ट ॥ उमिनवम् ॥ ॐ
द० रुविष्ट ॥ ॥ ॐ निजामा
गामकुलविधिः ॥ ० ॥

अथ कन्यादानं ॥ स्वसूत्रं
सूयर्चिः ॥ अथ अस्मत्पु
त्रीकन्यादाननिमित्तार्थं कर्तुं
प्रीत्यर्थं अर्घ्यं नमः ॥ उम्ना
वृष्ट ॥ ॥ स्वसूत्रं आसनं द
द्यात् ॥ उम्नासनमादाय हि
साधुर्विनासा मर्चयिष्यामी
शर्वकं ॥ ० ॥ आमाताय ०

नि ॥ उम्नाय ॥ ० ॥ स्वसू
त्रं विस्तनदयं दयं ॥ य०
मर्तुं ॥ उविस्तनाविस्तना
विस्तनः ॥ विस्तनः ॥ यतिगृ
ह्मर्तुं ॥ ० ॥ आमाताय ० नि ॥
उविस्तनं यतिगृह्मर्तुं ॥ उ
व्याप्तिस्मानानामुद्यतामि
वस्यर्चिः ॥ ॐ यत्नमितिष्टा

मियामाकल्पशिदासति ॥ १
कमासर्तयनवकयादासर्त ॥
स्वसूत्रं यादायर्चय ॥ ॥
उपोर्च्यार्च्यार्च्यं यार्च्यवति
गृह्मर्तुं ॥ ० ॥ आमाताय ० नि
मर्तुं ॥ उपादायर्च्यं यतिगृह्मर्तुं
॥ उविनाडादादासविनाडा
ददमसीय ॥ मयियायार्च्यं
विनाडादद ॥ ३ ॥ गृष्मीमा
चम्य स्वसूत्रं अर्घ्यं दद्यात् ॥
स्वसूत्रं ददुर्लखलगरयाहन
॥ स्वसूत्रं य० ० ॥ उम्नाय
यार्च्यं अर्घ्यं यतिगृह्मर्तुं
॥ ० ॥ आमाताय ० निमर्तुं ॥

उम्नायर्च्यं यतिगृह्मर्तुं ॥ उम्नाय
यार्च्यं अर्घ्यं सवन्किमानवायु
या ॥ गम्यरुमोनिक्षाययति
मर्तुं ॥ उममूर्दवः यदिल्लमि
स्वयानिमर्तिगृह्मर्तुं ॥ अविष्टा
स्माकं वीनामायनासविमर्च्य
य ॥ ३ ॥ स्वसूत्रं नजिविया

यातिः कायः न दूय ॥ वृनः
स्वसूत्रेण आचमनीयं ॥ ७
आचमनीयमाचमनीयमाच
मनीयं यतिगृह्यं ॥ ० ॥

जामाताय ० ति मकु ॥ ७ आच
मनीयं यतिगृह्यं ॥ ७ आमा
गन्धस्वसास ० रुद्रवर्चसा । न
माकू नृपिर्ययजानामधिप
तिवर्चसा मविर्द्धननृत्ता ॥ ३ ॥

उदयस्यर्ग ॥ ॥ स्वसूत्रेण

मधूयर्कदयः ॥ ७ मधूयर्क
मधूयर्कमधूयर्कः ॥ मधूयर्क
यतिगृह्यं ॥ ० ॥ जामाता

य ० ति ॥ ७ मधूयर्कयतिगृ
ह्यं ॥ मधूयर्क्याचिनसाय ॥
७ मिहस्यत्वाचदूयासमीक्ष ॥
लखनदाय ॥ ७ दवस्यत्वा ॥
रुक्तास्ययतिगृह्यं ॥ मधू
यर्कस्ववत्तादातसमयावर्ण
गुलितानवाले ॥ रुमीसआग
नगते ॥ मकु ॥ ७ नमः ॥ स्यावा

स्यार्थान्नगनयत्तु आविर्द्धन
रुनिः ० कामि ॥ ३ ॥ तस्य ति
याग्नानिमकु ॥ ७ रुयमधूना
मधूयर्कयनम ० नृयमन्नाद्यं
तनादं मधूनामधूयर्कयनम
नृयत्तुयनयनमामधूयर्क
नादाग्ननीति ॥ ३ ॥ रुमीमाच
स्य जामाता आमा निमकु ॥ ७
वाकू आस्यत्तु न ॥ ७ मयि ॥ ७
आस्यत्तु ७ आस्यत्तु मचद्वनकु ॥
७ ककुयामि ॥ ७ यमकु ॥
वाकामविलमकु ॥ ७ उवमि
डाजाग्रकु ॥ आनिशानिमः ३
आनिगनृत्तनामसदसकु ॥
सर्वानिगानि ॥ ७ ॥ ० ॥
स्वसूत्रेण ॥ ७ निमियत्ताद ॥
७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
जामाताय ० ति ॥ ७ मागानृदा
र्कदूहितावसना ० स्वसादि
त्यानाममृत्तस्यनामि ॥ ७ ॥
वाचविकिर्गुवउनायमाग
उं गप्रतिगृह्यं ॥ ४

स्वसूत्रवियवस्तुनित्यकंक
न्यादयक ॥ ० स्वसूत्रववाका
वदिस्मृति ॥ मनु ४ ॥ उग
ययकनायवानर्ण ॥ ॥ ॥ ॥
मंडितुविष्वेदवा ४ समाया
ददयानिनी समागविष्वा
धगासमूदही दधतुनी ॥ ३ ॥
(मनुस्मृत्यनुवर्त ॥ ॥ ॥ ॥
मातायानि ॥ ५ ॥

यश्चत्सुसुवेद्य ॥५॥ दूहिता ॥
 समुद्रदूहिता ॥ वृणविय ॥
 किन्यादानंदातव्यं ॥ आमागा
 यति ॥ उर्वददस्व ॥ ० स्वसु
 नलयधतमनु ॥ उद्योत्सुदि
 दामि ॥ आमागायतिमनु ॥
 उद्युधिर्वीत्वापतिगृह्णामि ॥
 उग्रशवनादकल्यत्त्यादिमास
 नकण ॥ उदागादंवनरुणा
 आधवमादित्यप्रवच।वना
 सोविष्णुच्यव।यतिगृह्णामि
 यंविधिः ॥ ॥ कन्यायातिव
 गतिलजलान्यादाय ॥ अग्र ॥
 अमूकगणाय अमूकप्रवनाय
 अमूकवेदाक्षयिने अमूक
 नामगमनि विनिश्चायजा
 माय विष्णुदेवगाय ॥ ॥
 अमूकगर्गा अमूकप्रवर्गा
 अमूकनार्त्ता ०० मां कन्यां स्व
 कीयालंकारां प्रजायतिदेव
 गां कायवाचनोऽनिता।णं
 यथायक्यकामनया स्वर्ग्या

किं कामनार्थं यत्नीत्वन पुनरपि
हं संवदय ॥ जामाता यः ॥

ॐ स्वस्ति ॥ उवाच मन्त्राय
॥ ॐ नमो यात्वा मर्त्यं वनं ॥ ददा
तु सा मृतत्वमसीया युदा गुणधि
मया मर्त्यं युनिगृहीतं ॥ नृदा
॥ वा ॥ वृहस्प ॥ त्वक् ॥ यमा
यत्वा ॥ हया ॥ ० ॥ जामाता

यः ॥ ॐ कादा ॥ ॐ आगु ॥ मि
सान ॥ ॐ कामं कामधूय ॥ ॐ
धुवा सि ॥ स्वसून ॥ पति ॥

कन्यादानप्रतिष्ठार्थं दिन
दक्षिणं तु यमहं संवदय ॥

जामाता स्वसूनारिषेर्कं कथयति ॥
ॐ देवस्य त्वा ॥ ॐ यदयं क ॥ ॐ त्वं
यविष्टया ॥ ॐ कन्या ॥ व वरुण

मगवाड श्रीशंजाना श्रीशंवाक
मीमि । यगुसाम ॥ सुयग यगु यगु
यगुस्यधनामं श्रीशं । अतस्तत्त्व

न ॥ स्वसून ॥ स्वकीययदवाध
नयुजनं कथयति ॥ अथादि ॥ वा
कं ॥ अस्मत्पुत्री कं दीनं संवदय
वाधनयुजानि मि त्वर्थं कर्तुं

श्रीसूर्याय नमः ॥ ॐ आक
धू ॥ ॐ दमासर्ग ॥ ॐ यः ॥

यादार्थ ॥ ॐ यः ॥ दसाध ॥
चन्दनं ॥ यज्ञाय वीतकं ॥
धूय दीप ॥ अग्नयै दि ॥

दक्षिणदानं ॥ यजमानाणि
षक ॥ साक्षीधाय ॥ ० ॥

जामाता स्वयदवाधनयुजा
कान्त्य ॥ ॥ दक्षिणदानं ॥
वाधनयुजानि षक ॥ ॥

स्वसून चत स्वान मुखसि
न ॥ जिविया कं दवत ॥ ॥
जिविन स्वसूनयार्ग ॥ चत स्वा

न मुखसिन ॥ दवत ॥ ॥
स्वसूनत आच अतया माव
व ॥ अयनलवको स्यगाथ ॥

जामाता कन्या निनी कर्णक
यति ॥ ॐ यदयि मनसा दूनं ॥
दि ॥ नूयवमानवा । दिनय

य ॥ ॐ विं कं ॥ ॐ सत्त्वमिनसा
कनामि ॥ अमूकदव्यानि ॥ क
मः ॥

उदिवस्वनादित्येष्टोत्तमपीथस्तस्मिन्मन्त्रः॥अद
तः॥पुमान्पुत्रो जायते विदते वस्वधा विश्वाहारः
वेवाममस्मभ्यः सावीः॥वामस्य हि क्षयस्य देवभू

स्मेत्तरो वसुसे दधात न च दाशीर्दादं पती वाममभु
सधते गृहे॥वाममभु सधित वामिमुभो दिवेदि
देरयाधिया वामभाजः स्याम॥ इत्याशीर्दा॥

जामाता कन्या निनी कर्णक
उग्रधान च कृतयति युतिलि
वायुस्यः सुमनाः सुवर्चा
वीरसूदवकोमाः स्थानाः
नागवद्विषदसंयुतस्यद॥
सामः युथसा विविदमन्त्रं
विविदउत्तमः ४ तृतीया निरु
यतिरुनी यस्तुमनस्यजाः ४॥
सामा विविदमन्त्रं वयि गन्धर्वा
दददमनय नयिचयूर्णं स्यादा
दार्मि मधम (था) र्मा सा नः
दृष्यात्तवगमामनयसानुत्त
उत्तमी विदुनय यस्यामृणकः
युदनाम (ग) र्थं यस्यामृकोमा
वरुवानि विष्टे ॥ सावध निनी
अग ॥ ० ॥ ०० गिकन्या
दानविधिः ४॥ धनद्विगता वाने ॥

तगा जामाता कन्या कर्मक
यति ॥ ॥ वसुका गाय ॥ रु
लितिनचय ॥ ^{युकाति} अश्यादियुष्य ^{विवाहया}
^{विनीयुत} गार्जनं ^{यन} कयति ॥ ॥ सूर्याधि ॥
अमृक (ग) प्रात्पेनय रुमानस्य पूगीवा
पोगी विवाहकर्मतः ४ कृष्ण ॥ ॥ यत्तु कर्तु ॥

उग्रकृष्ण ॥ गुननमस्कानादि
कंकत्वा न्यासं कयति ॥ विधि
र्थं अर्घ्यपाणयुजा ॥ आसपू
जा ॥ ॥ ३ रुतु ॥ यम्भक
र्णगृहीत्वा वामरुक् निक्षय ॥
तगा वलियुजनं ॥ ॥ ३ गणनी
त्वा ॥ गणयति वलियुदानं ॥
॥ ३ नमावत्तु गाय ॥ कणवलि
युदानं ॥ जातवदसं दूग्नवि
लियुदानं ॥ ॥ ३ घर्णयुगयावा
नः ॥ ॥ १ ग्वलियुदानं ॥ धूपदी
य ॥ ॥ ३ धूनसि ॥ ॥ ३ गजा सि ॥
^{अप. सात्र ॥ ति} अणुगन्धदि ॥ ^{वीर्यानिर्विकारं} ॥ ३ उद्वयनं ॥
विसर्जने ॥ वलियिच्छा यद्वा न
नयि ॥ ॥ ३ त्वं जविष्टदा ॥ ला
जा विद्वयर्ण ॥ गायत्री मन्त्रेण
कन्दनिनी कर्ण ॥ ॥ ३ यदवा
दव ॥ यवी समूहर्ण ॥ ॥ ३ मान
साक ॥ ॥ ३ यलेयनं ॥ ॥ ३ त्वीद

पूर्वकप्रदायार्त्तन॥ ॐ स (व
 दाय ॐ दमासर्तनमः॥ ॐ व
 यशर्वदाय ॥ सामवेदाय॥
 अथर्ववेदाय॥ ॐ अग्निमा॥
 पूर्वप्रदायार्त्तन॥ ॐ ॐ वत्वा
 ज्ञाता॥ दक्षिण प्रदायार्त्तन॥
 ॐ अग्निमायादि॥ यन्त्रिम
 प्रदायार्त्तन॥ ॐ अन्तादवी॥
 उत्तरप्रदायार्त्तन॥ ॥
 पुनः पूजनं॥ ॐ स (वदाया
 गि (मय सामदेवताय गाय
 त्री चन्दसर्तनमः॥ ॐ यशर्व
 दाय शान्ताज (मगायव
 द्देवताय त्रिष्टुप् चन्दस
 २॥ ॐ सामवेदाय कोष्यय
 (मगाय नृददेवताय जग
 ती चन्दस २॥ ॐ अथर्ववे
 दाय वेतानस (मगाय ॐ
 नृददेवताय अनेष्टुप् चन्द
 स २॥ ॐ ॐ नृदाय २॥ ॐ अ

नय २॥ ॐ यमाय २॥ ॐ नैर्भृता
 यनमः॥ वनूनाय २॥ ॐ वायव २॥
 ॐ ववनाय २॥ ॐ गीताय २॥
 ॐ विष्णवे २॥ वद्व (व २॥ नृदाय
 २॥ याजामयनमः॥ द्विसमिध
 दामः॥ ॐ कं ॐ कानव यै इया ॥
 ॐ कं ॐ वृषीं इया ॥ ॐ एवाह
 दवः॥ अग्निर्समूखी कनवी ॥
 वद्वसर्तन॥ यतिगासर्तन॥ ॐ ति
 चलासर्तन॥ ॐ दिव्यधर्मः॥
 वद्वसर्तन॥ ॐ विष्णुवनाटमसि॥
 यतीगासर्तन॥ यववनात्मासर्तन॥
 यतीगयदात्य॥ ॐ यत्पुष्ट ॐ न
 दः॥ क (गनर्तमाङ्गर्तन॥ ॐ अ
 यादि ॥ यतीगवाविष्णु
 नय ॥ ॥ वद्वर्तयुजय ॥
 ॐ वद्व (व २॥ यजायगय २॥ स
 वर्यादवया २॥ ॐ वद्व यज्ञा
 नी॥ ॥ यतीगयुजा ॥ ॥
 ॐ वद्व (व २॥ ॐ अन्ताय २॥ ॐ अन्ताय २॥

ॐ ॐ वद्व (व २॥ ॐ अन्ताय २॥ ॐ अन्ताय २॥

दक्षिणोत्तराक्षरानाम् ॥ १ ॥

ॐ विष्णु व २ ॥ यनीताय २ ॥ अ
श्या २ ॥ अर्वाय २ ॥ ॐ ह्रीं दि
व्यु ४ ॥ वक्रात्मन ॥ ॐ अ व म न ॥
यनीतात्मन ॥ ॐ विष्णु न नाटम
सि ॥ ॥ ॐ ह्य ह्य यनीतात्म
पन ॥ ॥ ॐ नि व म्मादियुनी
गार्क पूर्ववित्तय ३ ॥ ॐ कया ^{नमो मुनी लयी वय क}
नमि ॥ व ॥ ननय नि म्मन ॥
गतायथाविधिमकुल सन पूर्वक
वक्राद्यस्त्रकलगाचर्न ॥ ॐ गत्वा
यामीत्यादि दानाचर्न ॥ १० ॥
गता वक्राद्युजर्न ॥ ॐ वक्रा लय
जायगय ० दमासर्न २ ॥ यूर्य २ ॥
गताक्षर्न ॥ ॐ यीनयीनचतुर्वा
द् वक्राद्यचतुनानर्न । संसया
नचवियाणी दकु दसुक्रमकु
र्त ॥ यीताम्वनधर्न दिव्य वृष्ण
जिनविरुषिर्न । यन्मासनमि
तदर्व शावयष्टु दिम सिर्न ॥
ॐ वक्रा लनम ४ ॥ ॐ यजायगय

२ ॥ ॐ चतुनानताय २ ॥ ॐ ह्रीं सा
सनाय २ ॥ वद ॥ ॐ वक्रयस्त्रार्न ॥
^{ॐ अ व म न ॥} ॐ वक्रा लय १ ॥ ॐ वा म्मलस ४
यगन ४ ॥ ॐ धमचुदग्नि ४ ॥
आवाहनादिधृयदीयार्न वि
क्षय ॥ गत ४ अस्त्रकलगायुजा ॥
ॐ धनाय २ ॥ ॐ धनाय २ ॥ ॐ
सामाय २ ॥ ॐ अश्या २ ॥ ॐ अ न
लाय २ ॥ ॐ अनिलाय २ ॥ ॐ य
ष्टाय २ ॥ ॐ यरासाय २ ॥ ॥
ॐ शंजग ॥ ॐ ह्रीं दिव्यु ४ ॥ ॐ
नावगा ॥ ॐ दवद्युगी ॥ ॐ विष्णु
र्क ॥ ॐ दिवावा ॥ ॐ यगदिष्टु ४
॥ ॐ विष्णु न नाट ॥ आवाहना
दिसगुल युजा ॥ पूर्वव ० ॥ ग
त ० लादिलोकपालाचर्न ॥
ॐ आ वृष्णोदिनाग्रदपुजर्न
^{ॐ गताय निव ॥ १ ॥} लोकपालाचर्न तूर्व ० ॥ ॐ अष्ट
रुवा निषदर्न ॥ ८ ॥ ॐ अष्टमा
सा ४ पच ० वि ० ॐ ह्यदि ॥ य
र्ववदलियुजर्न ॥ गत ४ स्त्रव

विवा ॥ ॐ नम ४ ह्रीं रुवा ॥ श्री लक्ष्मी ॥ ॐ आशुते ॥ ॐ
धीमल्लिखी ॥ यदयददी ॥ ॐ अ नम ४ ॥ वदहन ॥
ॐ प्रलायक ॥ नागय ॥ ॐ नमो मुनी लयी वय क ॥ सपानाग ॥ ॐ वन ॥

ॐ नमो ॥

मकुलमभयसादियुजनं ॥ गता
दयविसिन्दुन निधानपूजनं व
दन ॥ चतुस्वस्तीत्यादि धूय
दायनेवयुरुलयगिष्टानं वि
क्षय ॥ गभयशाजय ॥ सार्धं च
कथयति ॥ उद्ध्विष्टादुखगुमि
त्यादिना ॥ अगुगन्धदि ॥

गताथयदासनं कथयति ॥ दक्षि
लोकमगुलपूष्यराजन प्रियवि
प्रयविष्टेकचुदनानिषादणीया
प्रश्रायस्माली ^{नरुला} श्ववर्गवर्माङ्ग
नीकण उदयमनकण श्राय
^{समिधदय उ वन म} तिलगुल ^{हालक मज्जिने} अग्निवस्तु जयमाला
च पूर्वप्राणदक्षिण ॥ उद्याग
याग ॥ मृगमालवर्न ॥ उदयविश्व
स्म ॥ यविश्वचुदनं ॥ उदयिष्ठा
ननाट ॥ यविश्ववन्धनं ॥ अर्ध
प्राण निक्षययादणीयाप्रयग
यर्ण ॥ उषत्यष्टनक ॥ कण
नर्ममाङ्गनं ॥ उममडाह मि ॥
प्रादलीजलनयनय ॥ उदवा

नाया ॥ यविश्वमलाजनं ॥ उ
युष्मावेन्दु ॥ उद्यद्वगुयं ॥
उमविष्टुत्वा ॥ आत्मानं सिचय ॥
उमविष्टुत्वा ॥ सर्ववस्तुषादणी ॥
प्रादलीमनियवीगमक्षस्मय
य ॥ आशस्मालीयगयर्ण ॥
उषत्यष्टनक ॥ कणनर्ममा
ङ्गनं ॥ उमदीनयियासि ॥ आ
र्धप्राण निक्षय ॥ उद्ध्विष्टा ॥
द्युगप्राणयस्तुद्धुग्नेनिक्षय
॥ कणप्रगृहीत्वाद्युगविन्दुन
ग्नेनिक्षय ॥ उमयदगा ॥ क
णमनगद्वर्ण ॥ उगन्धदस्म ॥
कासाश्वनवद्युगलाजनं ॥ उद्या
गानमिष्ट ॥ पूर्वगृहीत्वायगय
य ॥ उदवस्तुत्वा ॥ अर्धद्वर्ण ॥
उद्ध्विष्टा ॥ द्युगलाजनं ॥ उम
विष्टुत्वा ॥ कणनयगमग्नेदया
॥ उदयविश्वस्म ॥ आर्धयविश्व
निक्षय ॥ उगजासि ॥ आर्धयुज
यित्वावीकणिकथयति ॥ आर्धया
परुनमिति पणित्वा ॥ पूर्ववित्वा
दणीसंस्कारं विक्षयकर्मकथयति ॥

[illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः २

ॐ व्रतनयना
दीक्षा
ॐ

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

[illegible]

नामदयः यनया वनयः न
 यस्तु नामदयः ॥ ^{उग्रमन्त्रमन्त्र} त्यागवर्मन ॥
 अर्धपाणदकनायस्यर्गि ॥
 ॥ ॐ अग्निवदुःपथमादवगा
 नां सोम्येयजामृचिणु मृत्पाण
 ॥ गदयः राजावनू (भनम
 न्यतीयथयः सुयोगमर्ध
 मनादास्वाद ॥ ॐ दमग्रय ॥
 ॐ मामग्निस्तुयार्गिभदस्य
 यः पुजामस्येनयतुदीधमाय ॥
 अगुन्यायस्तु जीवनामस्तुमाता
 योगमानंदमरिवक्षतामियः
 स्वादा ॥ ॐ दमग्रय ॥ ० ॥
 ॐ स्वस्तिनाम्न दिवायुधिव्या
 विष्वातिधायथययणाय
 दस्यमिदिदिविजार्गिपुनर्क
 गदस्मास्तुदविर्गिधदिचिण
 ॥ स्वादा ॥ ॐ दमग्रय ॥ ^{धगसु}
 ॥ ० ॥ ^{कस्या} वस्तुभक्त्याय ॥ ॐ सग
 न्नयन्तुयिविगनप्रदिश्यानि
 व्रक्षमंजननभ्राय ॥ अयेतु

मृत्युवमर्गमभ्रागदवस्वगाना
 अरयिदुःपथनः स्वादा ॥ ॐ द
 मृत्युवववस्वगाय ॥ ॐ यनमृ
 त्यामृनयनदियन्तं यस्तुमृत्यु
 ॐ गनादवयानात् । चक्रमग
 न्नगगवुवीमिमानः पुजाः
 जीविषामागवीनास्वाद ॥ ॐ
 दमृत्युवववस्वगाय ॥ ॐ सीत्या
 गः ॥ अर्धपाणदकनउयस्य
 र्गि ॥ वस्तुवदिः कयति ॥
 संचवपणीगनिधाय ॥ ० ॥
 सर्वस्याद्युगादुर्गिदया ॥
 द्युगादुर्गिदुर्गि ॥ ॐ सफगम
 ॥ गगस्तिलादुर्गि ॥ कल
 नयनिष्ठा ॥ सख्यादुर्गि ॥
 गगलाजादामः ॥ पूनयः सु
 यद ॥ ^{द्विपका} अलीनयगसलाजाम
 मिध द्युगाद्यावजादग ॥ अ
 द्वाविद्यमनुः ॥ ॐ अर्धमिर्ग
 दर्वकन्यानिमयचक्रमना

वाक् ॥ ॐ कृमार्थागाममिधलाजाद्युगमिधन
 लाजानजिलावाववगिनीः ॥ ॐ मिस ॥ ॐ नमिधन ॥ २

अथ मादवधतामचिदुमायन
 स्वाहा ॥ ॐ दममय ॥ ॥ ॐ ॥
 यनायुयवृगलाजानावयनिका
 । अथमानसुमयनिवधकांहा
 गयाममस्वाहा ॥ ॐ दममय ॥
 ॥ ॐ मांलाजानावयाम्यन्नीसम
 द्विकनर्वा । ममदुव्यवसंवद
 नीतदन्निवनमन्यागमियत्स्वा
 हा ॥ ॐ दममय ॥ ७ ॥
 अथ कन्यायादक्षिणैरुक्ता
 दुष्टयुक्तामनु॥ ॐ ॥
 गमो गगत्वायदसंमयायत्वा
 जनदक्षिणैर्यथासंशरागम
 उमासविगायनधिमर्त्यत्वा
 तुगदस्यत्वादिवा ॥ अमादम
 सि सात्वत्सात्वमस्यमाअद
 सामादमस्यमर्क्योवदपृ
 थिवीत्वं ॥ गावदिविवंदाव
 दसदनगादधवद ॥ पुजापु
 जनयावदपूजानविद्यावद
 वदकसक्तजनदक्षेयः संप्रि

अथ मादवधतामचिदुमायन

यावाविष्णुमनस्यमानोय ॥
 मगजद ॥ गीर्जावमगजद ॥
 ग ८ ॥ ग्यामगजद ॥ ग ॥ ७ ॥
 यैकलिकानसमासद्यलयाव
 क ॥ अथमानमानादत्यक्तन
 सिक्ती ॥ ॐ ॥
 (मवत्वं ८ सिक्तीगव ॥ अतिनि
 वृत्तगत्याववाधस्यपुननाय
 ग ॥ अनादवमनु॥ अथग
 थगयति ॥ ॐ ॥
 वसुरागवाजिनीवति । यांत्वा
 विष्वेस्यरुगस्ययुजायामस्याय
 ग ॥ यस्यारुग ८ ममगद यस्या
 विष्वमिदंजग ७ । तामयगमथ
 गम्यामियाकुलमरुमयग ८
 ॥ ७ ॥ अथनिवयिनामनं ॥
 जामाताकुलमरुअनिनिनत्वाय ॥
 ॐ निवानामासि ॥ ७ ॥
 मगययवदस्यविदु
 नासद । पुनः ८ यतिथाजाया
 दाग्नेः ८ पुजयासद ॥ ० ॥

गयीयम
 नी ॥

अथ
 नमः

अथ
 नमः

श्रीकृष्णपुत्रसंज्ञितेलासाला ॥ ३ ॥
 उं पदक्षिणमकिगलिकानथावदने ॥
 वोवदमिसामग ॥ ३ ॥
 वक्षिणसामगयसिबक्षपुत्र ॥ ३ ॥

स्यतिर्मयायत्यापडायगीसं
वर्णनद४गर्ग ॥ ॥ यकली
सखीनामनयन ॥ गगायसू
सिद्धामनसिद्धाश्राद्धति४ ॥
द्युतन ॥ उषजायनयस्वाद ॥
उरुक्षिककुस्वाद ॥ गिलाइ
ति४ ॥ उषाम्बर्क ॥ विवादा ॥
उमनाइति४ ॥ यतिष्ठा ॥ ॥
वीदावनक्य ॥ ॥ गगादण
वाटनाइति४ ॥ स्वस्वमकुणस
वस्थाश्राद्धतिन्दया७ ॥ वास
वयुजा ॥ भक्तिक ॥ पृष्टिक ॥
यवधन्यादि ॥ मन्त्रसंकल्प ॥
दिग्भर्त्त ॥ द्युतदीयवर्त्ति
का ॥ उषा७ ॥ उषोभक्ति४ ॥
मृष्टाकनगर्गिइदया७ द्युतन ॥
उमचवार्च ॥ उर्वन्नाम्र ॥
उमर्त्तनाम्र ॥ उष्याम्भ
॥ ॥ उष्यगर्ग ॥ उड्डरुर्म ॥
उषादिनाम्र ॥ स्वादा ॥ या
दिनाविश्ववदसस्वाद ॥

उषर्त्तया दिविगावसर्वस्वाद
उमर्त्तया दिगावकगीस्वाद ॥
उन्यनातिविर्कइदासिस्वाद
उमृतिविर्कइदासिस्वाद ॥
मृनास्तर्त्तयदास्तर्त्तगसर्वं वि
यागमम ॥ सर्वर्त्तय (मोक्त्य
यद्विदिगयथादिन४स्वाद ॥
उवेष्वननायविघ्नद मृनवि
गायधीमदिगनावदि४यवा
दया७ ॥ उषवदगस्येनमावय
जनमसिस्वाद ॥ मन्त्रयकृग ॥
पिण्डकृग ॥ मृत्तकृग ॥ पुनसा ॥
यदाहमनाविघ्नैष्वकान यव
विघ्नैस्यसर्वस्येनसावयज
नमसिस्वाद ॥ ॥ ॥ उषस्तिन
७७८४ ॥ उषय४ पृथिव्या ॥
उविष्णुवनाटम ॥ उमृनिर्द
वगा ॥ उषो४भक्ति४ ॥ ॥
वासवदक्षिणदानं ॥ वाच
नं ॥ वलिरुवर्ग ॥ दंश ॥ उका
मकामध्व ॥ मृगवप्रागर्ग ॥

ॐ समिप्रियानः॥ प्रणीतमाचनं
 ॥ यत्तु क्षीनयत्॥ वाक्॥ मदि
 वासादगयस्तु निमित्तं ॥ ॐ दवा
 गतु॥ ॐ आवायसु॥ ॐ संक
 ययाः॥ ॐ आवायसुमदि
 क्तम॥ ॐ गवत्स॥ ॐ दुर्यत्ता॥
 ॐ अग्निप्रियम्॥ ॐ ययः॥
 धिया॥ ॐ दवस्यत्ता॥ ॐ अग्नि
 नाय॥ ॐ दयदादिव॥ ॐ दय्यं॥
 ॐ धीष्वा॥ ॐ नमावत्स॥ ॐ नय॥
 ॐ यदवासः॥ ॐ यनस्वा॥ ॐ आव
 सन्॥ ॐ यथमादितीयं॥ ॥
 ॐ दिमस्यजनाय॥ दवगान्
 कमगसाय॥ ॐ दवागीर्वा
 दः॥ ॐ अग्निर्मयि॥ स्वाणीर्वा
 दः॥ ॐ यस्तु कर्म॥ ॐ उक्ति
 वक्तव्यम्॥ ॐ वक्ताविमर्शनी॥
 ॐ विष्णुनाटसमि॥ प्रणीतवि
 मर्शनी॥ ॐ कस्तुविमर्शनी॥
 वक्तादरमाचनं॥ ॐ अयाग
 यं॥ प्रणीतशिषकः॥ ॐ संव

दिर्नकाः॥ दविषा॥ अक्याटनड
 ययमनकृत्तश्च शङ्कया॥ ॐ गन्तु
 यागुत्त॥ ॐ मक्षमादव॥ ॐ म
 क्षमन्विनो॥ दस्तस्युगयनं॥
 ॐ गायर्षं॥ रसमिस्तकं॥ गिन
 सि॥ ललाट॥ गुजामृत॥ उन्नमिच
 कयति॥ ॐ यस्तु यस्तु म्॥
 अर्घ्याणां दकनानि कृत्तुवत्स
 नी॥ ॐ गन्तु कृत्तुवत्स॥ ॐ ग
 वक्षाम् कयति॥ वक्ष्माका वक्ष्य
 शङ्कया॥ ॐ कृतायकर्मणि स्वा
 दा॥ ॐ अकृतायकर्मणि स्वादा॥
 मक्तुः॥ ॐ नानिर्विवक्षिते गन्त्या
 यस्वादा॥ द्यगना विद्वद्वा॥
 तगान्यामः॥ ताम्बूलममयद
 त्वाग्निमुगविमर्शयत्॥ ॐ उद्वय
 क्त॥ वाचनलखनमग्निनिगद्य॥
 चन्दनादिग्वाणीर्वादिदः॥ सूर्य
 मादीधय॥ लासालावर्धका
 विनर्धगयनं॥ स्वस्तिकासन

लसाना ॥ नवचूनादिमाय ॥ धूपदीपकृष्ण
कर्म मन्त्रगा उवाच ॥ मननत्वाय ॥ चन्दनादिमा
गादि ॥ मन्त्रिनिर्वाय ॥ सासानमल वाधवनक्य ॥

सुप्यसदृशार्थकानय ॥ कर्न
खक्य ॥ तदिनप्रकलक्षण
यनचकानय ॥ ॥ ०० निवि
वाहविधिसमाक ॥ ७ ॥

विश्वनाम मन्त्रादिनिर्वाय ॥ मासधन ७

गताशमलयागा ॥ वस्त्रासस्वा
नगनका ॥ वधुवाश्राउसगय ॥
दूलिनकवयकावनगनयागा
याय ॥ गृहाश्राननवचूनादि
कालायाचार्थकानय ॥ लासा
लावयकूमठयदय ॥ वस्त्रास
कस्वानगनका ॥ चन्दनादिस
गुणश्राणीवदि ॥ ७ काकुत्सा
७ ॥ ७ मनाश्रुतिनयनिष्ठा ॥
श्रुतिनिनत्वाय ॥ सासानमल ॥
वाधवनक्य ॥ सद्गुणानि ॥
मासधन ॥ लासालावर्थन
यन ॥ स्वस्मिन्नस्मिन् ॥ दू
र्वमन ॥ गायविद्यकथकादि
श्रादिनमङ्गागा ॥ नाजायाइ

वाक्य ॥ समनश्रयागामनोर्जन ॥

अथनवाश्रनपूजाधूपदीपकृष्णानर्गमन्त्रमक
ल्यद ॥ क्रिष्ण ॥ मन्त्रासनविमलावासावो ॥
मन्त्रिनिर्वाय ॥ सासानमल वाधवनक्य ॥ ७

नसा ॥ गायविद्यममान ॥ सदृजन
याचक ॥ उच्चिष्टकलखक्य ॥
थकादिश्रादिनमन्त्रिनिर्वाय ॥
चन्दनादिश्राणीवदि ॥ ७
०० निगुमलयगाविधि ॥ ० ॥

गन्धतुर्थकर्मविधि ॥ ॥
नित्यकर्ममालाशाला ॥ गान्धले
नसदृशजन ॥ गताजामागाक
लन्दीकर्मकियति ॥ ॥ गता ॥
असादिनमालकायजा ॥ वाय ॥
संघायजावन ॥ सुगुण ॥ विधि
वैयकर्मकियति ॥ ॥ अथविद्य
साधनार्थचनूसाधनकियति ॥
श्रुतिदणकिया ॥ श्रुतिनाम ॥
लिखानय ॥ पूर्वद्याट ॥ उरु
नाद्याट ॥ यववाचनार्थसंघ
वयुगीननिक्षय ॥ ७ यजाय
तयस्वाहा ॥ ७ अग्नयसृष्टि
कर्तुस्वाहा ॥ कृष्ण ॥ उडदक
वाणमर्कसाधय ॥ कवालाय

मालका पूर्ववर्तीमन्त्राश्रु कथार्थवार्त्तन ॥ उपयमनकृष्ण
मादय ॥ चनूसाधनविद्विद्यमनु ॥ ७ अग्निगन्धस्वयं
मानायविद्वत्वा ॥ ७ विद्युगन्धस्वयंमानायविद्वत्वा
हा ॥ मन्त्रद्वयगुणमिष्टक ॥ चनूसाधन ॥ सासानमल ॥
विधि ॥ ७ मयाय ॥ ७

गोमयैः पी आना नोहं. गोमय द्वा मम अ गोमये ॥ गोमय सं पाण्डु विह्वलि. अ नमो गोमये न हं ३२५ गो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

य ॥ वसायानमूलिदूले ॥ गुरु
लं (न ॥ विगलेन (मधय ॥
कृष्णगुह्ययनवर्गनादकन
वद्धामृद्धिभूतिविचय ॥
मनु ॥ यागयति श्रीपञ्चाध्याय
शुद्धीगृह्यध्याय (मध्यानिदि
गागनज्ञानध्यागगुर्नाकनामि
साजायत्तमयासदासामिति ॥
रूतिभूमकदवीकृष्णवर्गीर
वडु ॥ ॥ विविधसंन्याय ॥
वन्दनादिभूतिवादि ॥ मरु
भूति ॥ गीतालावर्धनयन ॥
चन्द्राधर्न ॥ मनु ॥ उद्याले
सुखाभर्नादधामि भूति
नस्तीनि माः संमर्माः सानि
त्वत्वात्त्वमिति ॥ धागनाकस
वाचनं य (१०० ॥ कलरवक्याय ॥
लकाचननदीसचयक ॥ ग
तावधयरू सिंहासनउरुन
शा (न सुयय ॥ आरुति ॥
शोभ्यते ॥ मना रूतिनयुति ॥

उं अर्थ - मर्यादावर्धन विवर्धना निवर्धना वधमिति ॥

वधुदयावर्तनमनु ॥
उयकसमीमदय दिविच
नुमसिधित ॥ वेदाईजन्मान
दिया ॥ य (मधमगनद ॥ गति
जावेमगनद ॥ गति ॥ ॥ ॥ ॥
मगनद ॥ गति ॥ ॥ ॥ ॥
गयादनी ॥ वाग्वर्धन ॥
भक्तिकयोष्टिक ॥ यवधन्या
दि ॥ भूतसंकल्प ॥ सुक्ति ॥
विधिपूर्वकनयरू संवर्धनका
न ॥ यिनायक्याय ॥ वधाल
खलव ॥ साखिथय ॥ सा
मारिविय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यरू विधिस्समाक ॥ ॥ ॥
संवत्सरेवदनसंभूति संवलि
त माग्नहिनकृष्णयकीयदा
दधानि (मधुवधवासर्नग्रीद
वदुत्सजगामनादवनाजाया
धायनलिखितं स्वाथरुगुना
दगकर्मवृत्तक ॥ उरुह्या ॥

वक्रा ॥ विष्णुचक्रनादिभूतिवादि ॥ गति ॥ कलशलोचय ॥ मध्यागगुर्नाकनामि ॥ ॥ ॥

उं मना रूतिनयुति ॥
निरुद्धा ॥
शोभन
लोभ ॥

भूति ॥ भूतसं ॥ वक्रा ॥ वक्रा ॥ वक्रा ॥

वसिष्ठानसखिय ॥ कंकयिनयाय ॥ अमिलीरुनका ॥
वालवधर्न ॥ कंकयि चूसिवना कमानिका ॥ उं नका
रुद्ध ॥ पागका ॥ उं पावकान ॥ रुद्धा ॥ उं पवित्र ॥

पुम्वलिपलाहा ॥ उं पवित्र ॥ उं पागका ॥ समिध ॥
उं सदसमिति ॥ उं गलनडयक ॥ उं गयकृद्व ॥ वक्रसिन
सिवरूय ॥ वालवधर्नमनु ॥ उं अर्थममर्यव ॥
वक्रसिंहानाहर्न ॥ उं लजवि ॥ विद्य ॥ उं श्री ॥

चिठिनि (गुठ १)
 न्याकाटखा २
 नवचिठिनि
 श्रीममाश्री जीवत्सलदिकमिसा ॥
 वंदली (गुठ १) लदिकवाभन ॥
 मानधनी धनलदिक ॥
 खानयाक नकिनि ॥
 यगा यिथ ॥ दूथ कृणभाचान
 खादानकास चामनमदान ॥
 सुवानक विधुज सुवान ॥
 रंदिनिकथि रंदिनि ॥
 मधुयस (गुठ १२) ॥

मूलवाक सयकूम मधुयस (गुठ १) माल
 (थालक) काप (गुठ २) दूक ८ थ
 नक १ थसमा (गुठ १) दूक १२ थ
 सिकाय (गुठ ८) दूक १ थनक १ व
 नूय (गुठ ४) दूक १ मसिय ३२ दू
 क १० गधुवालन गिबडन दिन ॥
 सुगाय ३२ मालय लवल्याय ना
 गक गुल लवल्या थगनाजायाग ॥
 नाणीयाग सुगागाल लवल्या ल
 गुल्या सधरुनी लमखनी क्रसम
 दयिमिमति गुनिगुलि वीकेय १ ॥

लिया ॥ उधनवनग ॥ १ ॥ लिखन ॥ बद्धनी वदगनी गतिकर्तुं धियः सखायं यनिषस्वजाना ॥ यथवलि दुवि
 गताधिधनवन् ॥ २ ॥ लोभ ॥ गभावननी समनवथाया मार्गत्रयं विरुता मयसु
 ॥ अयनगुचिधना ० सी विधाने २ आलीकषत्रिसु ननी अमृगान ॥ ३ ॥ नादान ॥ वदनीनी यिकावदूज सयग
 ॥ विषवद ॥ ४ ॥ समनोवगण ॥ ५ ॥ धिः सधः १ यगना ॥ ६ ॥ निनदो जय गिधुसुग ॥ ७ ॥ अथ
 नथ ॥ ८ ॥ नथ निषस्वनेय गिवाजिन १ ८ ॥ यगयण कामयग सुखानथि १ ८ ॥ नृनिर्मिदिमानं विनायगमन १ यथ
 दनयकाने नमय १ ८ ॥ स्वप्न ॥ गीदो न्याषान ॥ ९ ॥ दसिनेथ ॥ नथवादन १ ८ ॥ विनस्य नाम यग यर्थनिलि
 मस्यवम् ॥ १० ॥ नथ नथमयग १ ८ ॥ मधम विव्वेतावय १ ८ ॥ दविः समनस्यमानो ॥ ११ ॥ गकि ॥ सवनी ॥ स्वादुष १
 सद १ यितना १ ८ ॥ दकुं धियः १ ८ ॥ कीवना गरीना १ ८ ॥ विणसमी १ ८ ॥ षवला १ ८ ॥ सगदीना १ ८ ॥ नवोवागना
 दा १ ८ ॥ न्याकालक ॥ १ ८ ॥ सधरुस १ ८ ॥

१ काव्यय (गणस्य) काव्ययवत्तानेन ध्वनेति विप्रवचनस्य ॥ दनागन (गणस्य) गवि
 काव्ययन (गणस्य) काव्ययनवनिष्ठा द्विनसति विप्रवचनस्य ॥ वृद्धस्य (गणस्य) वृद्धस्यति कथिते यावन्ति
 विप्रवचनस्य ॥ अगस्य (गणस्य) अगस्यदधीचिजे मिनीति विप्रवचनस्य ॥ कनवृद्ध (गणस्य) कनवृद्धा द्विनवाद
 स्येति विप्रवचनस्य ॥ (गणस्य) गणस्यवनिष्ठा अदस्येति विप्रवचनस्य ॥ शानद्विज (गणस्य) शान
 नद्विजो द्विनसवादस्येति विप्रवचनस्य ॥ विव्धमिग (गणस्य) विव्धमिगजीवि को नि केति विप्रवचनस्य ॥
 को नि क (गणस्य) को नि का विजमदनीति विप्रवचनस्य ॥ भद्रित्य (गणस्य) भद्रित्यमिग दयनेति विप्रवचन
 स्य ॥ भद्रित्य (गणस्य) भद्रित्यपि यला दवाचयतीति विप्रवचनस्य ॥ अग्न (गणस्य) अग्नविजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥
 अग्नविजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥ वत्स (गणस्य) वत्सो वचिवन शान्विजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥ शान्वि
 सावधु (गणस्य) सावधुजो वचिवन शान्विजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥ शान्विजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥ शान्वि
 जो वचिवन शान्विजामदग्नेयवनेति विप्रवचनस्य ॥ वेयासु यद (गणस्य) वेयासु यद सां कति सौजीवन

दवलजिनति विप्रवचनस्य ॥ मानव (गणस्य) मानवपुत्रव सां कति विप्रवचनस्य ॥ नित्यनर्तन कर्तव्य
 विगस्य ॥ ॐ त्यादि ॥ ॥ गतविनर्तन सवने नामकोत्तर्यनर्तन ॥ गदकनर्तन जातकर्म नाम निरुक्तमर्तन ॥
 दृष्टवगविदो दध्यथा का पर्वद्विद्विद्या ॥

संवत्सर ॥ १२२ ॥ आखार ॥ ३
 ३ ध्वक ॥ ३ ॥ नानाया ॥ ३ ॥
 व नृपलमलया कायया सि
 धनयाग स्वा विविक्षा कानव
 सालयावल स विइका व ॥

- १ जीवत्स पूनाहित
- १ प्रह्वीक जीवि
- १ धज आवाय
- १ कलन र्थकानि
- १ जामन पू
- १ मस्य नड
- १ वृष्टी लक्ष्मी धन वत्स
- १ रीख मि सार्थका वि
- १ यक यक्षिणी डाकि नि
- १ कोला द वासतय ॥
- १ नाम घुथिसतय ॥
- १ जाया वदानतय ॥
- १ योपूजा वायूजा ॥
- १ वदान याद्रता ॥ वदा
- १ नविकाया इमा इक
- १ यनखन सव लानस्य

चक ॥ मूयानवाधयाहावदुमाह
 कयन ॥ ग्रावायनपूजायावक ॥
 सिधुयागयाहावद ॥ गिद्धाका
 सलेधाकानइकायाववमालाया
 वद ॥ मिथनया सिद्धानमूलका
 कावय ॥ साकनवधाकांमलसा
 यावइकाया ॥ विविधयसूधन
 का ॥ धनलिसूयद्विष्टवुग ॥
 यद्वकूवनेक ॥ कूवनेव
 जाविय ॥ सगनवियपूनादि
 नगादिन ॥ यगविधि ॥

(कलशव्युत्तर ३२ सस्कृतन ॥
 वंक्रमश्रीव ॥
 यद्वसपूत्रोका
 याक्रमध्वज ॥
 रंक्रमकलन ॥
 यधमक सूकाययूननउ २
 यध्वामरुतिनिकुययिनि
 सि ॥ न्याकाटखग्वु २ यिनि
 निवाकायक मूलद्वारमस २
 नवयिनि नि ॥ इयिनिमाह
 गम ॥ श्रीवकुलैहिकमिसा ॥

वैकुलिव ॥ कलशलदिकवाप्त
 मानेध्वनस (गम १) ध्वनमान
 कायाकनकिनि ॥ यताविधस
 ग्वु ॥ यद्वलहिकवाप्त
 यताद्वधुस (गम १) यद्वग्रा
 चाय ॥ लोहानकास (गम १) का
 मनसाहान सूवावकूधिस
 (गम १) ध्वनसूवन रंदिनि
 कूधिस (गम १) कलसलंदिनि
 मधुयसलनिव (गम १) २
 ध्वनजगयाकलगधधनविधि ॥

(मूलवृकसयसूमधुय (गमयमालध
 लकव काय (गम २) दूक १२५ ध्वन
 सध्वनक २५ धासमागम १२५ १२५
 कूसिकाय (गम ८) दूक ८५ ध्वनक
 १५ ध्वनय (गम ८) दूक १२५ मूसिय
 ३२ दूक १०५ गधुवालनंतिवर्जिन
 हिनमाल यत (गम १३) दूक १२५
 यूलयात ८ कलित ४ (धाजायध
 ध्वनलित्यावरवड ॥

अथ वक्राक्षी उक्ता गुरु विधि ॥ ४ ॥
 विन कलहा गमठ व सनीन गमठ
 अष्टकलसग सगुध वलि गमठ
 का गमग्रस रुलक कायानमा
 लका पाचलक ॥ रुनि नि प्रसा
 दपि गि निहा गहदिका चन्द्रम
 लुलध गवाय ॥ कलहा चन
 याय यथा विविमकुवा ॥ अष्टक
 लहाया वद ॥ ॐ यू अरं ॥ ॐ वनाय
 २ ॥ धनाय २ ॥ सामाय २ ॥ अक्षी २
 अनिलाय २ ॥ अनलाय २ ॥ नत्पू
 वाय २ ॥ प्रसासाय २ ॥ ॐ यू अरं म
 नऽ उग यू अरं विथा विथा विप्रस्प
 हरुना विपश्चि न ॥ विहा म द ॥ वव
 यूना विदक ॥ नमो देवस्य सविभुः
 पनिमु गि ॥ ॐ ॐ द विष्णु वचक्र
 मनुष्या निद ॥ वपद म ॥ तम वमस्य
 ना ॥ ॐ ॐ नावना ॥ वन मगी रंग
 ॥ सुय वशिनी मनवस स्या ॥ वमू राना
 दसी विष्णु वरदा वस्य पृथिवी ययूना
 मयूरवे ॥ ॐ द वष्णु गोद व वाद व
 ॥ रगद व वाद्या वरा पात्रा प्रगम द्रु
 नैकल्पय निरु द्रिय कू नयगी मा ॥
 कनगी ॥ स्व ॥ गम व मा वद गी द वा स्त
 य ॥ आयू मी निर्वदिष्ट म्पू का म्मा
 निर्वदिष्ट मग्न न मवी वष्म म्पू थि

वा ॥ ॐ विष्णु नैकी वी र्या विप्रवा
 नय ॥ पाथिवा निविममन अरं सि
 या अस्कराय इरु नरं सधसं वि
 वक्रमान म्पू ॥ कात्रगा या विष्णु व
 त्वा ॥ ॐ दिवा वा विष्णु उगवा पृथि
 व्यामहा वा विष्णु उना नन निहा
 उरा हि रुसा वसना ए लस्व प्र
 यच्च द कि ला द ग म वा विष्णु व
 त्वा ॥ ॐ प्रग दिष्णु गवग वी र्या
 मृ गमनगी म ॥ कू वना गि निहा ॥
 यस्या नृ वृ प्रिष्णु विक्र म ॥ ए वमि
 दिय नि रुवना नि विष्णु ॥ ॐ
 विष्णु न नाट म सि विष्णु ॥ गृपु
 ॥ विष्णु ॥ स्पू न सि विष्णु कू वा सि
 वेष्णु वम सि विष्णु वत्वा ॥ ८ ॥
 थन थका नि स्य व्रक्षु लिवाला माला
 डरुय स्वस्ति सव निर्मना दि लीख
 नहाय ॥ कलहा दिखान गन क म्मा
 ग्रय र्थ नै ॥ मग रू गा वा सगुल
 x x x x x x x x x x x x x x x x
 सूकालि वि वलु म लुल नत्वाय ॥
 सूकाय द्वाया ॥ थ ॥ अष्टकल ॥
 ॥ या वन स्तान या क ॥ ॐ यू अरं ॥
 नउपू शायाना ॥ वलु म लुल दिय
 ॥ लू सि ॥ वन ॥ मवल रवन स्तान ॥
 नन्दना दिज्वा ॥ वी द सीख न गि

६

अष्टकलहा यलया पिनिश को ॥

प्रणिष्ठा मासधनयाचकाडा कुविनेकवीयक
 भाउरुनिष्ठायक अथवमुननिचक ॥
 धकलसधथंगाथवृक्षलिवा सिन्धु
 द्वाधूनकाडा रुलिनिष्ठायहययाग ॥
 धनवृक्षवादीसुक्काय ॥ ॥ धनवाकल
 वायारुलिनिष्ठायविधि संष्ठादिनधूनक
 थंका निष्ठावाकलवालासात्ताडायरुम
 लुपयाथाकलीसर्वसाचकसाने नमस्क
 तवलि अग्निलाहूनकासगुलसदका
 स्या नाजायाकलसाक विडासग धनदाय
 सगुल ॥ ॐ वसा ॥ ॥ प्रासादपिगिनिस्स
 लिनिपाग २ गनरुं गिनस्यदाय स्वस्तिवा
 क ॥ रुलिष्ठाय ॥ ॐ ग्रागानमिद्राशन
 रात्रि ॥ ॐ सहस्रासिहस्रसा ॥ सनाविय
 पाग २ ॥ ॐ प्रजापत ॥ लचंग ॥ ॐ हिन
 ल्य गरु ॥ ॥ थाकूनलाकशलसानानायल
 पदनामकुय ॥ स्त्रीविय ॥ ॐ वृंद विष्णु ॥
 वेदावनकुय अनिनिनत्ताय ॐ नमः ॥
 हासीगमल ॥ ॐ गववायू सिरुभानविप्र
 निष्ठा ॥ मासधनयाचकाडा लीसास्यथ
 गयन स्वस्तिकसगय गायवजिसगुल
 धनिनक ॥ चयकलैखकाय ॥ ॥ गनर
 लि रुलिनिष्ठायाडा सनासराय ॥
 धनवाकलवा रुलिनिष्ठायविधि ॥
 धनविधिथं सिन्धुकाय ॥ ॥ धधून
 व वृक्षलिवागकागगहिमाय ॥ ॥ हय ॥

सुक्कायाडाभास कलडी यादुडा नैस्वस्ति
 कसगलस्वस्य ॥ निर्मळनवलि मगरुगा
 उचासगुलप्रासादपिगिनिस्सलिनिगनरुं
 लिगयाडादाय ॥ रुलिनिष्ठाय लुंवग
 नगिचक ॥ गनरात्रि सनाविधि ॥ ॥ अरिष
 कचन्दनादि भ्राणीवादि वेदावनकु
 य ॥ सखनगिप्रगिष्ठा मासधनयाच
 काडा लस्वस्य गलयन स्वस्तिकसमान
 गायवजिसगुलधनिनक ॥ गनरात्रि
 रुलिनिष्ठायाडागय ॥ ॥ धनवृक्षलि
 वारुलिनिष्ठायविधि ॥ ॥ ॥ ॥

वृक्षनिवा

एवञ्च ही वा प्रथम नञ् स्वला शङ्का
नैस्तथैव सावक न ॥ नावसंस्था
कानरुसं वञ्चनी वा साकलं ख
नमाञ्चक्यक ॥ मिताथं कानि सा
कनश १ सगुल विय ॥ कसकनसि
वृमृददं दमनवा वासीन काध
स धन प्रथम दिनमा ॥ ॥ ॥
सनि कृद्वथ शङ्कलया मज्जि न
वृद्वदवगादिन मालका गय
लडा सिद्धकाय ॥ वाकलसंका
नि ॥ कलसकलसनकाय ॥ वञ्च
लियायाथ शङ्क सकनकलका
य ॥ गयलडा कसिद्ध गंगल
सदिगनकमुनिविन आदिन सा
रालाचकीकाय ॥ धवमु स्वशु
नह ॥ गयसिधु आगं शककया
अलिगविस्मदयशल ॥ मवन
गल वञ्च निवा निरवानननका ॥

पञ्चकृपादिगयाग कानचि
कन आगन विस्मकीय थडा
कन विस्महय ॥ शक्ति सगुल ॥

विवाहास विस्मगया मिमगुल
क निविनि सिद्धन ॥ गठकि १
विधुमृद धन गयाडा विस्म

भडा कयासगुल विय पूरुषया
सगुल शक्ति शका विय थं कानि
ठिनीन ॥ निविगीन दानस
म ॥ सिधु निसानल ग्याल सग
विनमृद वास्यगय ॥ मिताथ ॥
निनीका ॥ वञ्चनी वासगुल धनि
नक ॥ धन वगुध दिनया ॥ ॥
अथ षष्ठ दिन थडा कनश १
सगुल ॥ वासुमृगगल ॥ एत
कि १ प्राल मृद विस्म सगुल विय
थं कानि ॥ पूरुषया शङ्का
सगुल प्राल मृद वास्यगय
धन मृदया ॥ कस नृषु नमा
नकी निमकृषयाय ॥ ॥ ॥

रदमुकठिचियग. पाकास. डला
लपगगया. पागामपदवाया
लूपलडाहपल. श्रुदगगया
मोसकापगीचिय. दधीपल
सकास. पिनमिपयुगयाडा
पिनकूपडलालपगनरु
ठाडा. कुमलकानचियमा
ले. हवानीचिडागयडि
डा. मनसशकामाल ॥ ॥
रुगमावद्वचावीयागडा
लेसकगीस्वडालेमा. मरु
गमाडिडाले ॥ शुद्धदतग
लेसथकगदिनस्वथमाल
कालमायानाम. कृष्णडि
न. कृष्णसान. वनाट ॥

पञ्चहिरण्यवार्तविष्णुलाकानूपरुकात्मनी
नाग्यशुभसामवेदात्मा वासुदेवनभामुनि ॥२॥

ॐ ह्रीं वा ना ॐ प्रजापते ॐ गववायु ३

धनप्रमनयागयाविधि ॥ मुनिप्रसह
 नकिर्नलंसायाडीहय. सिंहसनन
 य. निर्मळनादि. अरिषक. मगरु
 नाउचीत्वाय. ॐ असुन ॥ वक्रादि
 दवगा. प्राहिग. कासिआवान. थ
 कानि. नकिं. मालकास्ती. ग्वयवि
 यकवधन. प्रसयागवियक. मा
 मववूलनकंगय ॥ वक्रासस्वानग
 न. तक्रसन. साग्रत्वं ॥ सगुनीत्वा
 य ॥ ॐ असुन नि ॥ अनि ॥ ॐ द्विवाता
 प्रासापिनि ॥ ॐ प्रजापत ॥ दासा ॥
 ॐ गववायू ॥ प्रसुतसिंदुनाहनी
 त्वाय ॥ छायाक ॥ ॐ लंजविठदा ॥
 सिंदुनपायुक्ताय ॥ ॐ श्रीश्वरा ॥ मि
 मदनीलाय ॥ ॐ वसा ॥ नकिर्नस
 गुधविय. नक्रयार्ग ॥ आशीर्वाद
 वक्रादीपूजायाय. वाक्. विवाहक
 र्मणि ॥ वक्रा. अष्टकलशयदय
 दही. श्रीलक्ष्मी. नागनाज. दधिउ
 मापनि. श्रीसूर्यनायाय. सदाशिव
 स्वस्वानंद. प्रपालवहिद्वाना. अक्षरा
 ल. गम. प्र. को. मानि. श्रीलक्ष्मी. अ
 प्रमनयागसहजाननिमित्तार्थ ॥ ५

नि. स्वगयागीपूजा. वाक्. ल. दि. ददि
 ल. गामा. वक्रा. दि. स्वस्वान. ॥ वा
 क्र. ल. न. अरिषक. चन्दनादि. आशी
 र्वाद. वक्रा. लाय. श्रीलक्ष्मी. कलश
 दि. लाय ॥ न. क्र. सी. स. रु. आ. न. नि. प्र
 नि. द्या ॥ ॐ मनी. ह. नि ॥ दा. स्त. न. क्र. य
 सा. दि. थ. य ॥ ॐ उ. द्य. य. रु. वि. स. र्ज. न.
 मा. स. द्य. न. ला. ता. ला. ड. थ. ग. य. न. स्व. स्ति
 का. स्त. ग. य. स. रु. ला. ड. न. या. न. क. स्व. स्ति
 वा. क्प. ०. ग. ॥ उ. छि. छ. का. य ॥ मा. म
 व. द्या. ग. य. व. य. वि. य. क ॥ दर्प. ल. सि. द्ध
 न. पा. य. वि. य ॥ द. य. प. नि. वा. य ॥ अ. म
 स. या. या ॥ क. शु. द्वा. न. न. पि. ग. य. न. मूल
 द्वा. न. न. द्वा. ग. ह. य. य. रु. उ. य. क. अ. पि
 वा. स. रु. क. रु. क. सि. द्ध. न. ग. य. हा. ल.
 ॐ सि. द्ध. न. ॥ ॐ मनी. ह. नि ॥ स्व. स्ति. वा. क्
 अ. म. ल. या. व. द. ॥ ॐ न. मा. अ. प्र. स. न. प. ०
 स. द. व. न. स्प. नि. स. द. गि. नि. स. व. स. क
 पि. भु. सी. द. स्व. स्ति. मा. स. म्मा. द. य ॥ ॥ १४
 धन. इ. लि. स. ग. य. थ. ग. पि. ग. वि. य. वि
 धि. ११. ॥ ॥ अ. नि. प्रा. सा. द. पि. नि
 जिल. न. य. न. ॥

मगद्वृत्तायां
६॥ ॐ त्वंगवि
सदा ॥ ॥

कलसयाजगत्तवधनिर्मितादिमैश्वर्याविदुःखिप
तासि२ मूलं गुह्यं लीला हरत्रय विद्य॥
उंवसा ४ प॥ सखानभिप्रणिष्टा॥ सिद्धनानाहर्न
सला समष्टि विद्य॥ उंलक्ष विद्या॥
विद्य॥ अंप्रीत्य

